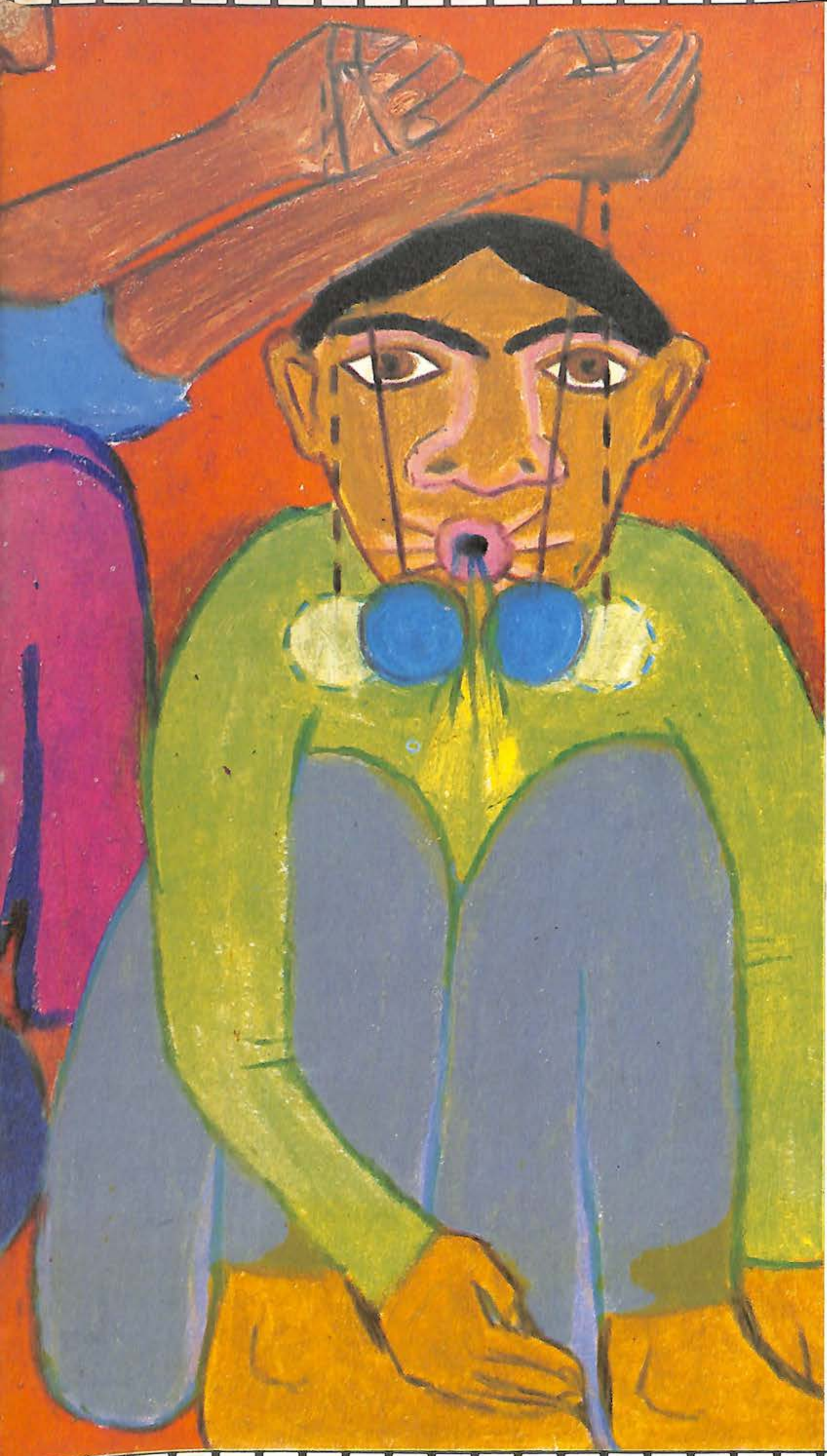

बाल विज्ञान पत्रिका

चकमक

समावेश अंक

अक्टूबर,1987

रु. 2.50

यह जो मछली का चित्र तुम देख रहे हो, है वास्तव में एक नारियल। नारियल जालीदार थैली में बंधा है। जाली के कारण मछली के शल्कों का आभास होता है।

रंगबिरंगी पत्तियों से बनी यह रचना कभी कलश जैसी दिखेगी तो कभी मेंढक जैसी!

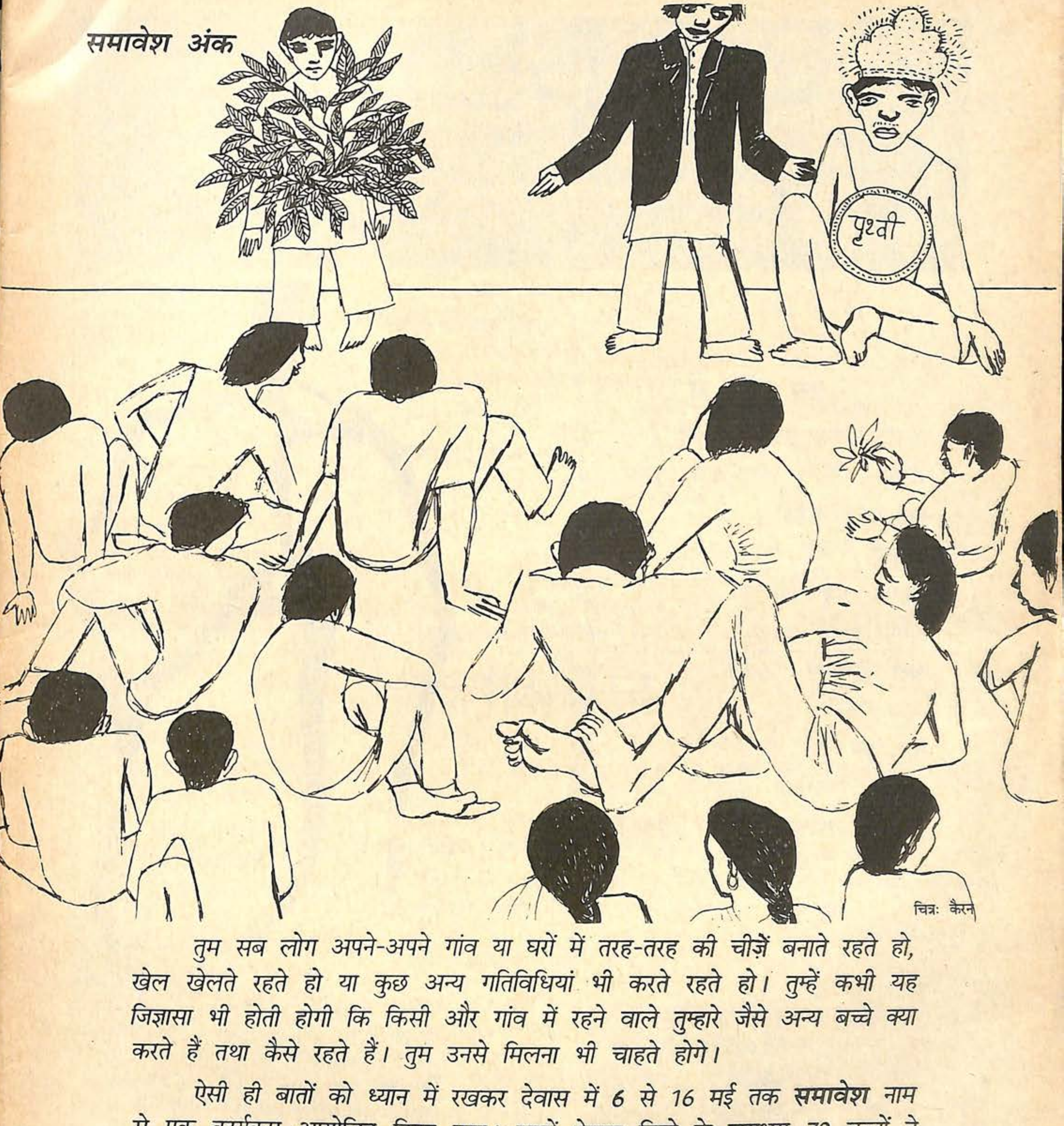

चित्र: कैरन

तुम सब लोग अपने-अपने गांव या घरों में तरह-तरह की चीज़ें बनाते रहते हो, खेल खेलते रहते हो या कुछ अन्य गतिविधियां भी करते रहते हो। तुम्हें कभी यह जिज्ञासा भी होती होगी कि किसी और गांव में रहने वाले तुम्हारे जैसे अन्य बच्चे क्या करते हैं तथा कैसे रहते हैं। तुम उनसे मिलना भी चाहते होगे।

ऐसी ही बातों को ध्यान में रखकर देवास में 6 से 16 मई तक **समावेश** नाम से एक कार्यक्रम आयोजित किया गया। इसमें देवास जिले के लगभग 70 बच्चों ने भाग लिया। इन दस दिनों में कई सारी गतिविधियां एक साथ चलीं, जैसे नाटक, सामूहिक गीत, कठपुतली, चित्रकला, मिट्टी के खिलौने, प्रयोगशाला, प्रश्नमंच, विडियो फिल्म, दैनिक अखबार निकालना आदि इन सबका एक संक्षिप्त विवरण तुम अगले पन्नों पर पढ़ोगे।

समावेश में तैयार कुछ चित्र, नाटक तथा अन्य सामग्री भी यहां प्रकाशित कर रहे हैं।

हमें खेद है....

प्रेस में किन्हीं कारणों से काम बंद होने से सितंबर, 87 का अंक प्रकाशित नहीं हो सका है। जो पाठक चकमक के वार्षिक या अर्ध वार्षिक ग्राहक हैं, उनका चंदा एक माह आगे बढ़ जाएगा। जैसे जिनका चंदा दिसंबर, 87 में समाप्त हो रहा है, वह अब जनवरी, 88 में समाप्त होगा।

— संपादक

इस अंक में

चकमक दोस्त/पाठक लिखते हैं	2
कहानी : खीरा खाऊं कचर कचर	4
धातु-घरेलू तरीके	6
कविता : वर्षा	10
कहानी : जूं और टूं	12
अपनी प्रयोग शाला	13
खेल खेल में : कला	17
माथा पच्ची	19
मेरा पन्ना	20
कविता : जलेबी	21
समावेश सामग्री	22 से 40

आवरण : कैरन

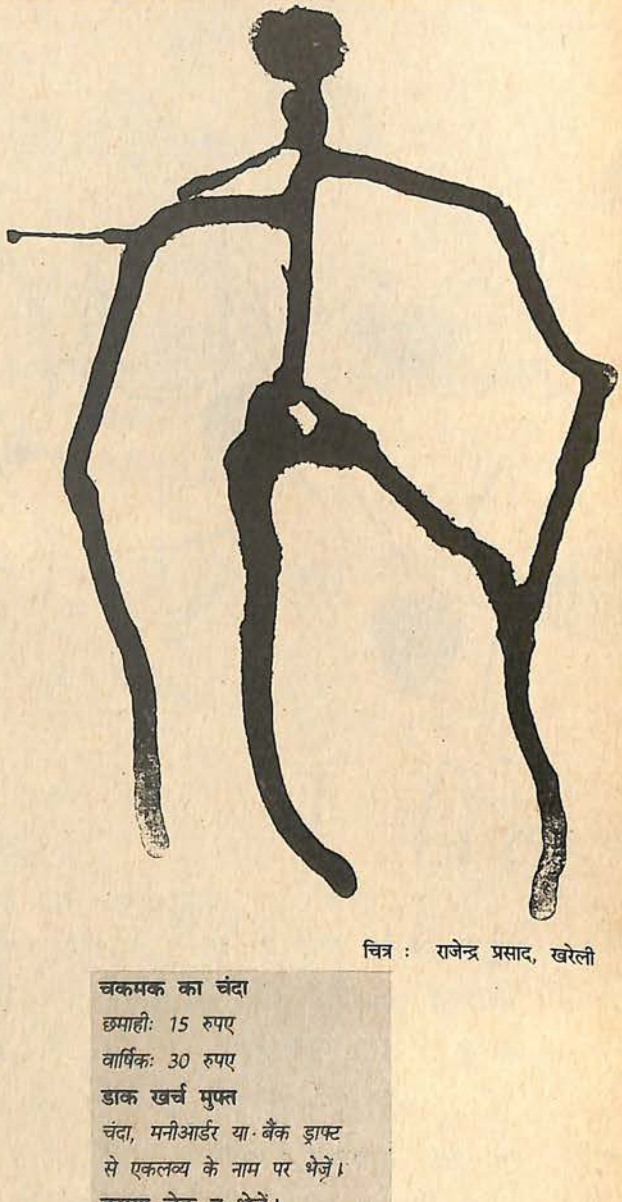

चित्र : राजेन्द्र प्रसाद, खरेली

चकमक बाल विज्ञान पत्रिका
वर्ष 3 अंक 4 अक्टूबर, 1987

संपादक:
विनोद रायना
संपादक मंडल:
राजेश उत्साही, गोपाल राठी
कला:
जया विवेक
उत्पादन/वितरण
हिमांशु बिस्वास, कमलसिंह

चकमक का चंदा
छमाही: 15 रुपए
वार्षिक: 30 रुपए
डाक खर्च मुफ्त
चंदा, मनीआर्डर या बैंक ड्राफ्ट से एकलव्य के नाम पर भेजें।
कृपया चेक न भेजें।

पत्र/चंदा/रचना भेजने का पता—
एकलव्य
ई-1/208, अरेरा कालोनी
भोपाल-462 016 (म.प्र.)

एकलव्य एक स्वैच्छिक संस्था है जो शिक्षा, जनविज्ञान एवं अन्य क्षेत्रों में कार्यरत है। चकमक, एकलव्य द्वारा प्रकाशित अव्यवसायिक पत्रिका है। चकमक का उद्देश्य बच्चों की स्वाभाविक अभिव्यक्ति, कल्पनाशीलता, कौशल और सोच को स्थानीय परिवेश में विकसित करना है।

पाठक लिखते हैं

जुलाई, 87 का अंक देखा। यह देखकर खुशी हुई कि आपने **खेल खेल में कला** को भी बड़ा महत्वपूर्ण स्थान दिया है। श्री विष्णु चिंचालकर ने इसका आवरण बहुत ही सुंदर तरीके से बनाया है। मुख पृष्ठ पर छपी हिरण की तस्वीर तथा मध्य पृष्ठ पर पत्तों से बनाई गई कृति मुझे बहुत पसन्द आई। मुझे यह जानकर भी आश्चर्य हुआ कि पत्तों के जरिए इतनी अच्छी कृतियां बनाई जा सकती हैं।

इस अंक में **'लोहे'** पर लिखा हुआ लेख भी अच्छा लगा। एक अनुरोध है कि इस विषय पर सरकार की स्टील के बारे में जो नीति और मांग है उस पर भी कुछ विचार प्रकट किए जाएं। इससे पाठकों को इस धातु का भारत के लिए क्या महत्व होगा यह भी पता चलेगा। वैज्ञानिकों का ऐसा मत है कि 10-25 वर्षों में जब लोहे का इस्तेमाल अवश्य कम होगा और नए प्लास्टिक मैटिरयल्स अर्थात जो भौतिक दृव्य हैं जिनका कि विकास विज्ञान और टेक्नोलॉजी की प्रगति से हो रहा है। उनका उपयोग भारत में बढ़ेगा, इस पर विचार करने की जरूरत है।

'आश्चर्य लोक में एलिस' धारावाहिक श्रंखला ज्यादा बढ़ती जा रही है। आपको यह जानना चाहिए कि भारतीय विद्यार्थी इसको कितना पसंद करते हैं। इस जानकारी की मुझे भी बहुत जिज्ञासा है। मेरे ख्याल से ग्रामीण विद्यार्थी इस धारावाहिक को कितना आत्मसात कर पाते हैं यह जानना भी बहुत आवश्यक है।

(चकमक के पाठक लिखें कि उन्हें 'आश्चर्य लोक में एलिस' धारावाहिक कैसा लगा! —सं.)

□ डा. पी.जे. लवकरे
सलाहकार, भारत सरकार
विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग, नई दिल्ली

जुलाई, 87 का अंक अच्छा लगा। इस अंक की **ओजोन की छतरी** व **पेड़ लगाओ** कविता बहुत अच्छी लगी। और लोहे के बारे में इतनी जानकारी पाकर मन प्रसन्न हो गया। सच है कि चकमक की प्रत्येक प्रति आश्चर्य व आनंद का खजाना लाती है।

□ विजय शुक्ला, बाजना, रतलाम; अनूप श्रीवास्तव, श्याम नगर; धर्मेन्द्र साहू, बिलासपुर; अमीरुद्दीन अलीउद्दीन, मकरानी, सोंडवा

इस अंक में **'खेल खेल में: कला'** बहुत ज्ञानवर्धक तथा विचारोत्तेजक लेख लगा। ऐसे ही अन्य कलाओं से समय-समय पर अवगत कराते रहें। पर्यावरण प्रदूषण तथा वन कटाई जैसी समस्याओं पर, बचाव के तरीके सरल भाषा में हर अंक में दें, ताकि इन विषयों के प्रति जागरूकता बढ़ सके।

□ राजेन्द्र मालवीय, हरसूद

चकमक दोस्त

1. श्री राम विश्वकर्मा, सातवीं
2. पढ़ना, सायकिल चलाना, खेलना
3. शा. मा. शाला, लच्छनपुर (रायपुर)

1. अनिल त्रिपाठी, 16 वर्ष
2. पढ़ना एवं अच्छे खेल खेलना
3. शा. उ. मा. विद्यालय, सण्डावता, राजगढ़

1. नेमीचंद्र साहू, 13 वर्ष
2. सायकिल चलाना, चित्र बनाना
3. शा. मा. शाला, लच्छनपुर (रायपुर)

1. अजीत पटेल, 8 वर्ष
2. चकमक के चित्र देखना, कहानी सुनना, खेल खेलना
3. राजकीय प्राथमिक शाला, चिनगवाह, सीधी

1. मधुलता शर्मा,
2. पढ़ना, लिखना, खेलना, संगीत सुनना
3. गुरुद्वारा रोड, गद्दीचौक, रायगढ़

1. तरुण कुमार शर्मा,
2. खेलना, पढ़ना
3. गुरुद्वारा रोड, गद्दी चौक, रायगढ़

1. अमित जैन, 14 वर्ष
2. टेबिल टेनिस, शरारतें करना, पुस्तकें पढ़ना
3. श्री दिगम्बर जैन उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, नवलखा, इंदौर

1. रीतेश कुमार भुयारकर, 12 वर्ष
2. चित्रकारी, विज्ञान के चलित मॉडल बनाना
3. माध्यमिक विद्यालय, पालड़ा, शाजापुर

1. रमेश चंद्र गेहलोत
2. खुशखबर सुनना एवं सुनाना, खाना एवं खिलाना
3. प्राथमिक विद्यालय, पालड़ा, शाजापुर

1. मोहम्मद रमजान सुलड़ा, 10 वर्ष
2. क्रिकेट खेलना, पत्र मित्रता
3. शा. उच्च. मा. शाला, भरींडांड (बिलासपुर) 495 118

1. पियूष चंद्र द्विवेदी, 9 वर्ष
2. पढ़ना, खेलना, सायकल चलाना
3. द्वारा श्री रमेश चंद्र द्विवेदी, ब्यौहारी शहडोल

1. वरदी चंद्र, 14 वर्ष
2. कबड्डी खेलना, चित्र बनाना, पेड़-पौधे लगाना
3. लसूड़िया राठौर, मंदसौर

1. दशरथ कौशिक, छटवीं
2. सायकिल चलाना, स्कूल जाना, चकमक पढ़ना, शतरंज खेलना
3. ग्राम—बंजारी, पोस्ट मड़ई, बिलासपुर

1. श्याम सुंदर कोसे, 17 वर्ष
2. मदद करना, समाचार पत्र पढ़ना
3. खोरपा, पोस्ट पाटन, दुर्ग

1. प्रमोद तिवारी 17 वर्ष
2. फुटबाल खेलना, लड़ना, पढ़ना

1. राजकुमार सोनी, 16 वर्ष
2. चकमक पढ़ना

1. एस. के. पुरोहित, 16 वर्ष
2. चित्र बनाना, पढ़ना

1. राजीव द्विवेदी
2. क्रिकेट खेलना

सबका पता: शासकीय उच्चतर मा. विद्यालय चंदिया (शहडोल)

खीरा खाऊं कचर कचर

भाजी का बड़ा खेत था। खेत में खूब बेलें थीं। कद्दू थे। पनडोल थे। ककड़ियां थीं और रामतुरई थीं। खीरे तो थे बहुत-बहुत। वहां उड़ता-उड़ता आया एक कौआ।

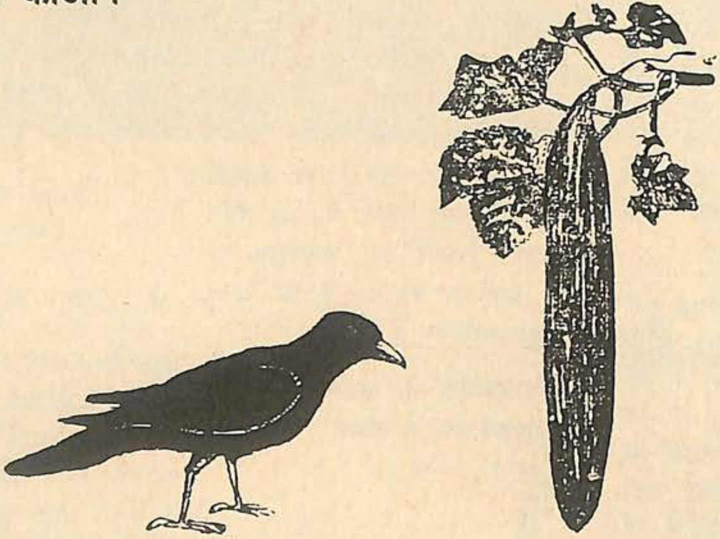

"आहा हा! कितने अच्छे हैं ये खीरे! चलो खाऊं मैं इनको कचर कचर।" कौआ गया बेल के पास। ज्यों ही उसने खीरे में चोंच मारी, बेल बोली—

"ठहर जा भाई, तेरी चोंच कितनी गंदी है। पहले पानी से अच्छी तरह धो ले और फिर खा कचर कचर।"

कौआ गया बावड़ी के पास "बावड़ी, बावड़ी, बावड़ी दीदी! आंगन में आया है कौआ भाई। दे थोड़ा पानी; धो लूं जरा चोंच। खीरा खाऊंगा कचर कचर।"

बावड़ी बोली, "ले न भाई पानी। पर लेगा तू किसमें? एक मटका ले आ और चाहे जितना पानी भर ले जा।"

कौआ उड़ता उड़ता गया कुम्हार के पास।

"कुम्हार, कुम्हार, कुम्हार जी महाराज! आंगन में आया है कौआ भाई, दे जरा मटका, निकालूं थोड़ा पानी, धोलूं अपनी चोंच, खीरा खाना है कचर कचर।"

कुम्हार बोला, "मिट्टी ला, अभी बना देता हूं मटका।" कौआ उड़ता उड़ता गया खेत के पास,

''खेत, खेत, खेत महाराज, आंगन में आया है कौआ भाई। दीजिए मिट्टी, मैं दूंगा कुम्हार को, लूंगा मटका, निकालूंगा पानी, धोऊंगा चोंच, खाऊंगा खीरा कचर कचर।''

खेत बोला, ''ले आ हिरण का सींग और चाहे जितनी मिट्टी खोद ले।'' कौआ उड़ता-उड़ता गया हिरण के पास।

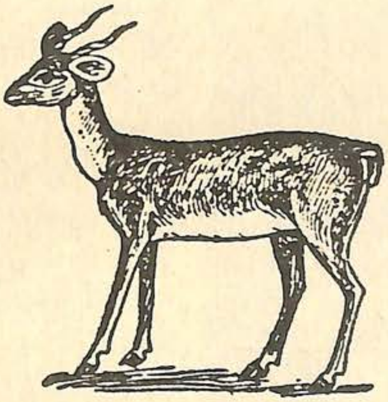

''हिरण, हिरण, हिरण महाराज, आंगन में आया है कौआ दादा, दीजिए सींग, लूंगा मिट्टी। दूंगा कुम्हार को, लूंगा मटका। निकालूंगा पानी, धोऊंगा चोंच। मुझे खाना है खीरा कचर कचर।''

हिरण बोला, ''दादा, उखाड़ ले यह सींग।'' फिर कौए ने हिरण का सींग ले लिया और गया खेत के पास।

मिट्टी खोदी और ले गया उसे कुम्हार के पास।

कुम्हार से उसने मटका लिया और गया बावड़ी के पास।

उसने बावड़ी से पानी निकाला और धो डाली चोंच।

फिर गया बेल के पास। बेल ने दिए बहुत से खीरे। कौए ने खाए कचर कचर कचर।

मूल लेखक : ताराबाई मोड़क
प्रस्तुतकर्ता : संतराम

धातु-घरेलू तरीके

जुलाई अंक में हमने धातुओं में से एक प्रमुख धातु, लोहे के बारे में पढ़ा। हमारे देश में लोहे के अलावा कई और धातुओं और धातुओं से मिश्रण जैसे कांसा, पीतल, टिन, सीसा, सोना, चांदी, कॉपर का भी इस्तेमाल प्राचीन काल से हुआ है, और इनसे चीजें भी बनाई गई हैं।

इस परंपरा को लोहे के क्षेत्र में लोहापीटे बंजारे अभी भी बनाए हुए हैं। बस्तर के आदिवासी इलाके में ऐसी ही एक परंपरा कांसे से संबंधित है। कांसे की यह कला अद्भुत है और इस से जो मूर्तियां या अन्य वस्तुएं बनती हैं, उनमें इतनी सफाई होती है कि दांतों तले उंगली दबानी पड़ती है।

चकमक की साज-सज्जा को देखने वाली जया विवेक खुद एक मूर्तिकार हैं। उन्होंने बस्तर की इस कला को वहां जाकर देखा, समझा है। इस कला और परंपरा का एक संक्षिप्त विवरण जया की ज़बानी:

बस्तर की आदिवासी जाति गढ़वा धातु की मूर्तियां बनाने के लिये प्रसिद्ध है। इन मूर्तियों को ढालने के लिए किसी बड़ी फैक्टरी या उपकरणों की जरूरत नहीं पड़ती। उनके लिए मूर्तियां ढालना रोज का काम है। वे अपने आसपास उपलब्ध साधनों से ही इन मूर्तियों की रचना करते हैं।

आओ, देखते हैं कि कैसे टूटे-फूटे पीतल के बर्तन (या अन्य धातुएं) एक सुंदर मूर्ति में ढल जाते हैं।

मिट्टी का ढांचा तैयार करते हुए जिस पर बाद में मोम चढ़ाया जाएगा

पहले नदी किनारे रेतीली मिट्टी को लाकर छानते हैं। उसमें से मोटे-मोटे कंकड़ आदि निकाल देते हैं। मिट्टी को गलाने के लिए उसमें पानी डाल देते हैं। मिट्टी के गल जाने पर उसे सानकर एक-सा कर लेते हैं। इसी मिट्टी से मूर्ति के अंदर का ढांचा तैयार किया जाता है। जैसे, किसी देवता की मूर्ति बनानी है तो उसका धड़ मिट्टी से बना लेते हैं। शरीर के बाकी हिस्से बाद में मोम से बनाते हैं।

मिट्टी से बनी मूर्ति को पहले छाया में रखकर सुखाया जाता है। बाद में एक दिन धूप में रखकर भी सुखाते हैं। जिससे अगर अंदर किसी तरह की नमी रह गई हो तो वह भी न रहे। नमी रहने से ढालते समय मूर्ति चटक सकती है।

अब मधुमक्खी के छत्ते का मोम लिया जाता है (इसे शहरों में बी-वैक्स के नाम से जाना जाता है)। मोम को लकड़ी और पीतल से बने सांचे में भरकर उसके तार बनाए जाते हैं। यह सांचा बेसन के सेव बनाने के सांचे जैसा होता है। इसमें अलग-अलग आकार के छेद वाली जालियां होती हैं जिससे पतले-मोटे तार बनाए जा सकते हैं। तार बनाने के लिए सांचे में मोम भरकर कंडे की आंच पर गरम किया जाता है। अब इच्छानुसार किसी भी मोटाई के तार को मिट्टी से बनी मूर्ति पर बिल्कुल सटाकर लपेटते हैं और बाद में लकड़ी के एक चिकने टुकड़े से मिलाकर एक-सा कर देते हैं। इस तरह मोम की एक पतली सतह मूर्ति पर चढ़ जाती है।

अब मूर्ति के बाकी हिस्से जैसे मुंह, हाथ, पैर तथा अलंकरण आदि मोम से ही बना दिए जाते हैं। छोटी-बड़ी मूर्ति के हिसाब से मूर्ति पर कहीं एक अंगुल भर की मोमबत्ती खड़ी कर दी जाती है। मूर्ति पर मिट्टी की तीन-चार सतह चढ़ाई जाती हैं। इसी समय हाथ-पैर

आदि के बीच में जो खाली जगह होती है उसे मिट्टी से भर दिया जाता है। मिट्टी की सतह मोमबत्ती के सिरे पर नहीं चढ़ाई जाती। बल्कि इसी मोमबत्ती पर मिट्टी की एक कीपनुमा कटोरी बना दी जाती है। इसी कीप में से पीतल मूर्ति ढालने के लिए डाला जाता है। जितना मोम मूर्ति बनाने में लगाया गया है उसका आठ गुना पीतल उस मूर्ति को ढालने के लिए चाहिए होगा। पीतल को छोटे-छोटे टुकड़ों में तोड़कर कीप में भर कर ऊपर से एक और मिट्टी की कटोरी लगाकर बंद कर देते हैं। और इस मूर्ति को फिर छाया में सूखने के लिए रख दिया जाता है।

अब मूर्ति ढालने के लिए सांचा तैयार है। इस सांचे को भट्टी में पकाया जाता है। यह भट्टी लगभग 1 फुट गहरी होती है और अंदर से ईंटों से चिनी होती है। इसमें ईंधन के रूप में कंडा, लकड़ी या कोयले का इस्तेमाल किया जाता है। भट्टी में हवा करने के लिए धौंकनी का इस्तेमाल किया जाता है। चमड़े की यह धौंकनी तुमने लुहारों या लोहापीटों के पास देखी होगी।

भट्टी के अंदर कंडों की एक या दो परत बिछाकर उस पर लकड़ी या पत्थर का कोयला, जो भी इस्तेमाल करना चाहें रखते हैं। इस पर सांचा रखा जाता है। और उसमें ऊपर तथा आजू-बाजू भी ईंधन जमा दिया जाता है। सांचे को रखते समय यह ख्याल रखा जाता है कि कीप वाला हिस्सा नीचे हो।

मूर्ति ढालने का काम आमतौर पर शाम के समय किया जाता है, क्योंकि सांचे का पकना और पीतल का पिघलना सांचे से निकलने वाली लौ के रंग से पहचानते हैं जो दिन के उजाले में ठीक से नहीं दिख पाती है।

भट्टी को जलाया जाता है और लगातार धौंकनी से हवा की जाती है। तीन-चार घंटे में सांचा पक जाता है, यानी अंदर का मोम जल जाता है जो कार्बन का

ढलकर तैयार मूर्तियां

छायाचित्र : घनश्याम

काम करता है। लेकिन पीतल पिघलने में थोड़ा और समय लेता है। सांचे से पीली लौ निकलना शुरू होती है जो धीरे-धीरे हरी होती जाती है। जब पीतल पूरी तरह पिघल जाता है तो नीली लौ निकलने लगती है। अब इस सांचे को बड़ी संडासी से पकड़कर उल्टा कर दिया जाता है, इससे मोम के जलने से खाली हुई जगह पर पीतल भर जाता है।

सांचे को भट्टी से बाहर निकालकर खुले में रख देते हैं। रात भर में यह धीरे-धीरे ठंडा हो जाता है। सुबह मोम पर लगाई मिट्टी को धीरे-धीरे अलग किया जाता है। मिट्टी को सावधानी से निकाला जाता है ताकि मूर्ति को नुकसान न पहुंचे। इसके बाद रेती और रेगमाल से इसे साफ कर लिया जाता है।

सरगुजा के दूर-दराज़ के गांवों में लोहे को कैसे उपयोग लायक बनाया जाता है, उससे संबंधित चार चित्र यहां दिए गए हैं....

लोहा अपनी प्राकृतिक अवस्था यानी अयस्क रूप में....

लोहे को उपयोग लायक बनाने के लिए भट्टी....

भट्टी में हवा ऐसे दी जाती है....

भट्टी से निकला स्पंज लोहा

छायाचित्र : आर.व्ही.पी. नरोन्हा

वर्षा

काले बादल छाए नभ पर
हवा चली अब झूम-झमक कर
गर्मी बीती आई वर्षा

झम झम झम झम पानी बरसा
जलती तपती थी जो धरती
पानी पाकर शीतल लगती

तरी मिली जब धरती को तो
सौंधी सौंधी खुशबू महकी
पौधे पेड़ नहाए जी भर

प्यास मिटी पानी पी छक कर
हरियाये खुश हो लहराए
नवजीवन उमंग भर लाए

ताल तलैया पानी भरकर
उमगे, मेंढ़क बोले टर्र टर्र
लाल रंग की बीर बहूटी

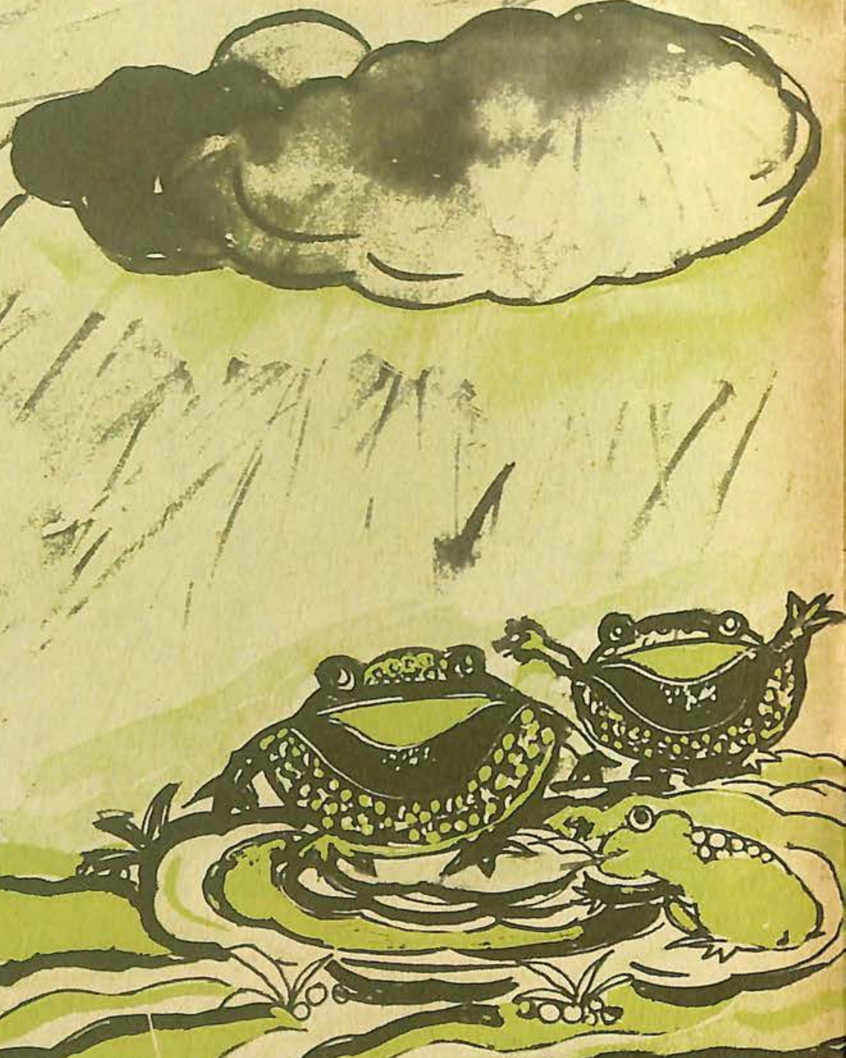

लिल्ली घोड़ी चींटा चींटी
धरती के भीतर जो रहते
कीड़े सब बाहर को निकले

गर्मी से मुरझाई धरती
पानी पीकर कैसे उमगी
काली काली जामुन पकती

सब्जी कई तरह की फलती
बरसाती फल ढेरों आए
सेब नाशपाती औ केला

सभी जगह ठेलों पर छाए
भुट्टा भुंजने सड़क किनारे
सोंधी खुशबू जी ललचाए

चित्रः हेमंत वायंगणकर, भोपाल

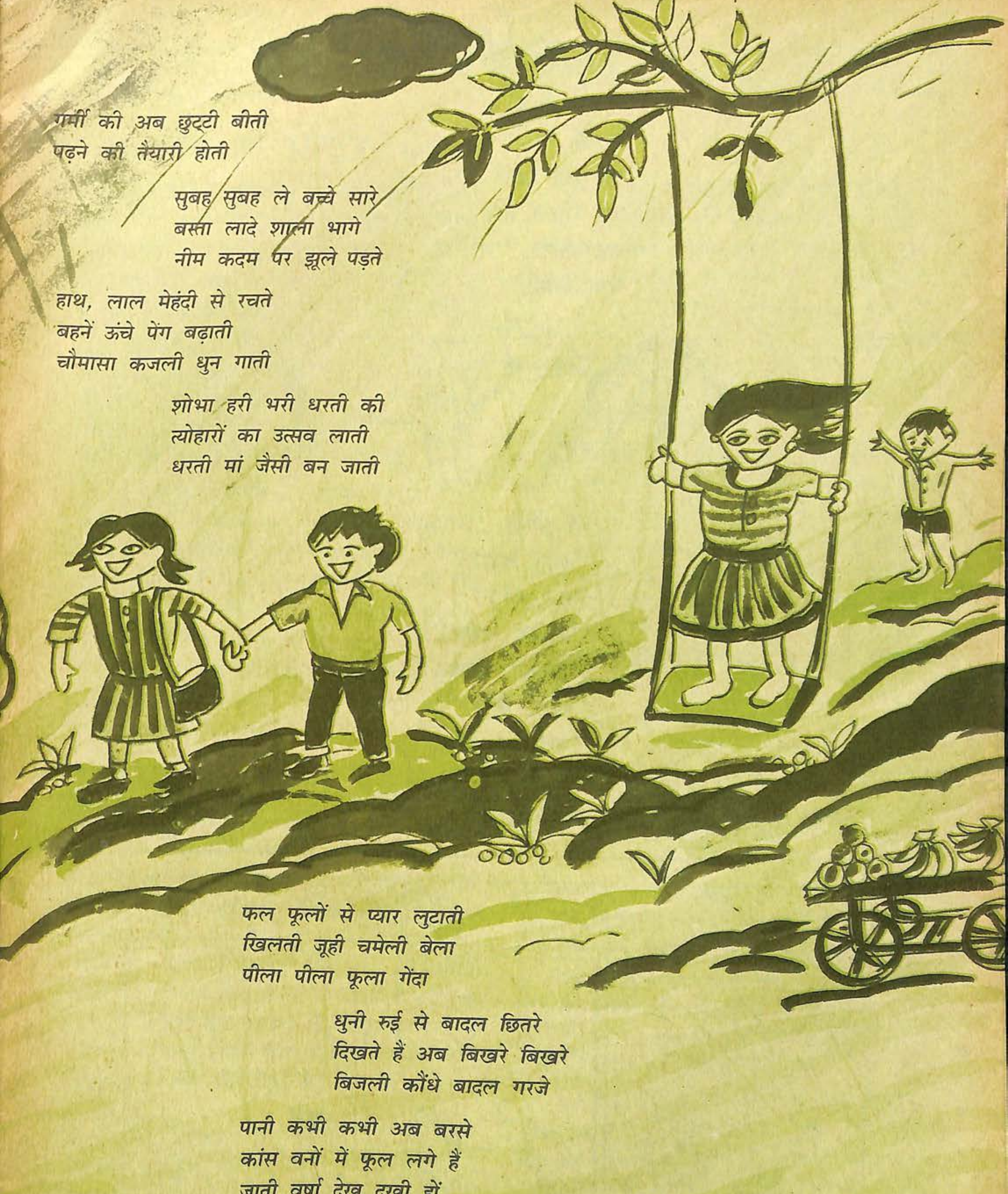

गर्मी की अब छुट्टी बीती
पढ़ने की तैयारी होती

सुबह सुबह ले बच्चे सारे
बस्ता लादे शाला भागे
नीम कदम पर झूले पड़ते

हाथ, लाल मेहंदी से रचते
बहनें ऊंचे पेंग बढ़ाती
चौमासा कजली धुन गाती

शोभा हरी भरी धरती की
त्योहारों का उत्सव लाती
धरती मां जैसी बन जाती

फल फूलों से प्यार लुटाती
खिलती जूही चमेली बेला
पीला पीला फूला गेंदा

धुनी रुई से बादल छितरे
दिखते हैं अब बिखरे बिखरे
बिजली कौंधे बादल गरजे

पानी कभी कभी अब बरसे
कांस वनों में फूल लगे हैं
जाती वर्षा देख दुखी हों

आपस में कुछ बोल रहे हैं
चंवर डुलाते डोल रहे हैं।

☐ सुधा चौहान

जूं और टूं

एक थी जूं।
उसको जन्मी टूं।
वह गई खाने को।
उसे मिला पैसा।
वह बोली, "मां, मां, इसका
क्या लाऊं?"

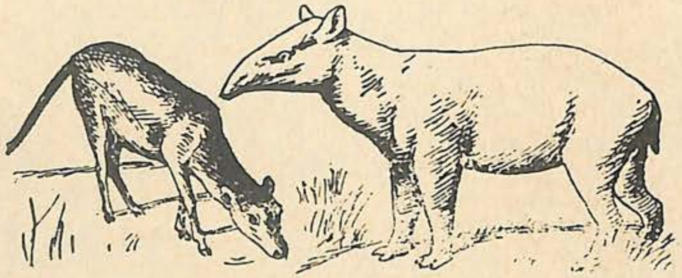

मां बोली, "भाजी।"
"काटूं कैसे?"
"चर्र चर्र।"
"पकाऊं कैसे?"
"खदबद खदबद।"
"खाऊं कैसे?"
"मच मच करके।"
"सोऊं कैसे?"
"बाएं करवट।"

मूल लेखक : **ताराबाई मोड़क**
प्रस्तुतकर्ता : **संतराम**

अपनी विद्युत मोटर बनाओ

बिजली से चलने वाली मोटर तो तुमने देखी ही होगी। वह मोटर जो कुएं से पानी खींचने से लेकर कल-कारखानों में छोटी तथा बड़ी-बड़ी मशीनों को चलाने का काम करती है। विद्युत मोटर के ऐसे कितने ही उपयोग जिन्हें गिनाते-गिनाते हम और तुम थक जाएंगे।

यहां हम उसी बहुउपयोगी मोटर के बारे में बात कर रहे हैं। विद्युत मोटर कैसे बनती है? कैसे काम करती है? और उसको चलाने के लिए विज्ञान का कौन सा सिद्धांत काम करता है? आओ खुद अपनी एक मोटर बनाकर यह सब समझने का प्रयास करते हैं।

अपनी मोटर बनाने के लिए यह सामग्री जुटानी होगी- लकड़ी का कार्क, एक लंबी सुई, कुछ आलपिन, ब्लेड, 6 मीटर तांबे का इनेमल चढ़ा हुआ तार, रेगमाल कागज, पेकिंग में काम आने वाली लोहे की पत्ती (15 सेंटीमीटर), लकड़ी का पटिया और दो चकती चुम्बक, एक या दो टार्च सेल, टार्च बल्ब।

एक कार्क लो। उसके ठीक बीचों-बीच एक लंबी सुई पार कर दो (**चित्र-1क**)। अब सुई को अपनी उंगलियों पर रखकर कार्क को अपनी धुरी पर घुमाकर देखो कि

चित्र 1 - क

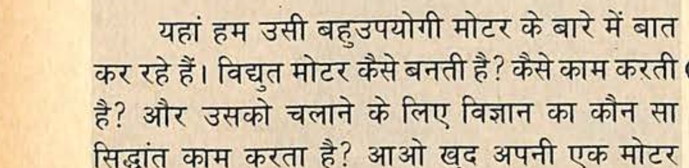

वह आसानी से घूमता है या नहीं। यदि कार्क का एक विशेष भाग ही हर बार नीचे की ओर रुकता है तो सुई को निकालकर फिर से बीच में डालने की कोशिश करो। कार्क की बेलनाकार सतह पर दोनों ओर 1 सेंटीमीटर चौड़े समांतर खांचे ब्लेड से काट लो। कार्क के मोटे छोर पर सुई के दोनों ओर लगभग आधे सेंटीमीटर दूरी पर कटे हुए खांचों में दो पिनें खोंस दो (**चित्र 1 ख**)। ये पिनें कार्क से लगभग 1 सेंटीमीटर बाहर निकली हों।

चित्र 1 - ख

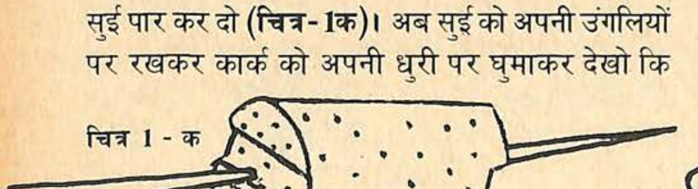

अब 6 मीटर के टुकड़े से ही तांबे के इनेमल चढ़े हुए तार का एक सिरा लो, उसे रेगमाल से साफ कर लो। साफ किए हुए सिरे को किसी एक पिन पर लपेट दो, पर ध्यान रखना कि तार का साफ किया हुआ भाग सुई को न

चित्र 1 - ग

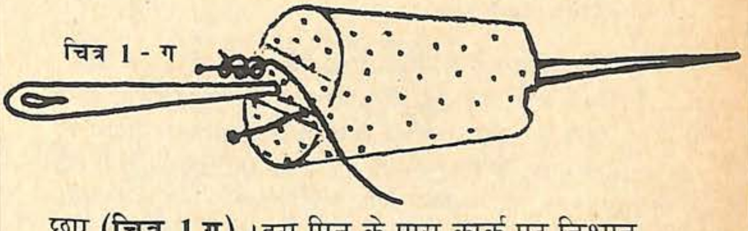

छुए (**चित्र 1 ग**) ।इस पिन के पास कार्क पर निशान लगा लो जिससे कि यह याद रहे कि तार का पहला छोर किस पिन पर लपेटा है। अब मोटर की कुंडली (क्वाइल) बनाने के लिए तार को कार्क पर बने खांचों में कसकर समांतर लपेटो। खांचों में सुई के दोनों ओर 'लपेटों' कि संख्या लगभग बराबर होनी चाहिए। इस प्रकार पूरा तार लपेटकर (लगभग 50 लपेटे) उस तार का दूसरा सिरा साफ करो और इसे दूसरे पिन पर कसकर लपेट दो (**चित्र 1 घ**)।

चित्र 1 - घ

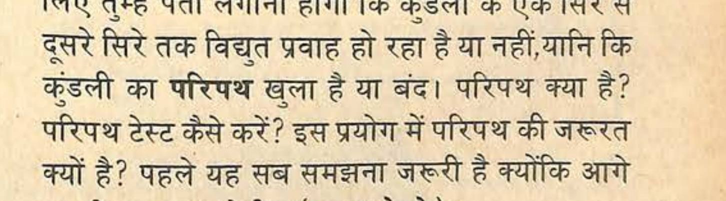

तुम्हारी कुंडली ठीक बनी है या नहीं यह जानने के लिए तुम्हें पता लगाना होगा कि कुंडली के एक सिरे से दूसरे सिरे तक विद्युत प्रवाह हो रहा है या नहीं,यानि कि कुंडली का **परिपथ** खुला है या बंद। परिपथ क्या है? परिपथ टेस्ट कैसे करें? इस प्रयोग में परिपथ की जरूरत क्यों है? पहले यह सब समझना जरूरी है क्योंकि आगे इसकी जरूरत पड़ेगी (**बाक्स देखो**)।

अब लोहे की एक 15 सेंटीमीटर लंबी पत्ती लो। उसे नाल के आकार में मोड़ लो। इस मोड़ी गई पत्ती के दोनों छोर एक दूसरे से लगभग 5 सेंटीमीटर दूर हों। दो चकती चुम्बकों को ऐसे पास लाओ कि एक दूसरे को आकर्षित कर वे आपस में चिपक जाएं। अब इस जोड़ी को पत्ती की एक भुजा की अंदर की सतह

परिपथ में स्विच

विद्युत की धारा के आने जाने के रास्ते को **परिपथ** कहते हैं।

तुमने देखा होगा कि सेल से बल्ब तक बिजली आने-जाने के लिए सेल के सिरों को बल्ब से जोड़ना पड़ता है। ऐसा करने से सेल से बल्ब तक बिजली के आने-जाने का चक्कर-सा बन जाता है।

किसी परिपथ को पूरा या चालू तब कहते हैं जब उसमें से विद्युत धारा बह रही हो। ऐसा न होने पर उसे अधूरा या टूटा परिपथ कहते हैं।

परिपथ में जितनी अधिक देर तक विद्युत धारा बहेगी उतने जल्दी सेल खर्च होंगे। इसलिए परिपथ में विद्युत धारा उतनी देर तक बहने दो, जितना कि तुम्हें अपने प्रयोग के अवलोकन के लिए जरूरी हो। इसके लिए तुम्हें एक स्विच बनाना होगा। स्विच बनाने के लिए लगभग 10 सेंटीमीटर लंबा लोहे की पत्ती का एक टुकड़ा लो। इस पत्ती को चित्र में बताए तरीके से दो जगह से मोड़ लो।एक लकड़ी के टुकड़े पर पत्ती के क सिरे में एक कील ठोंक लो। अब लोहे की पत्ती को इस लकड़ी के दूसरे सिरे पर ही कील ठोंककर इस तरह जमाओ कि पत्ती का ख सिरा पहले से ठुकी हुई कील के ऊपर हो, पर उसे छुए नहीं। तुम्हारा स्विच तैयार है।

पत्ती का ख सिरा उंगली से दबाकर नीचे लगी कील से छुआने पर परिपथ पूरा होगा, और तुम्हारा टार्च बल्ब जलना चाहिए। उंगली हटा लेने पर पत्ती कील से हट जाएगी, परिपथ टूट जाएगा और बल्ब बुझ जाना चाहिए। अगर ऐसा होता है तो तुम्हारा स्विच ठीक बना है। अब उसे तुम इसी ढंग से किसी भी परिपथ में लगाकर उसका उपयोग कर सकते हो।

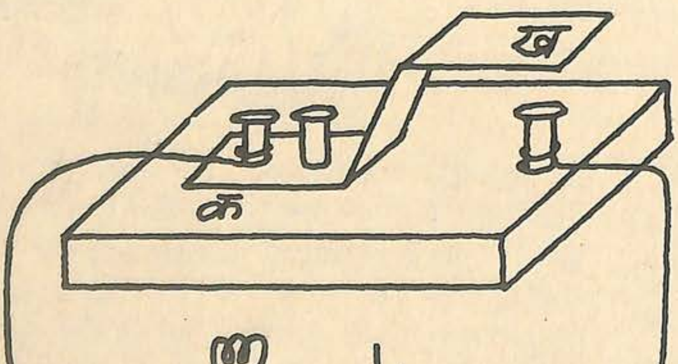

परिपथ टेस्ट करने का ढंग

तुमने बिजली विभाग के कर्मचारियों को बल्ब में दो तार लगाकर टेस्ट करते हुए देखा होगा। तुम भी इसी प्रकार बल्ब होल्डर में बल्ब (टार्च का) व दो तार लगाकर अपना विद्युत मोटर का परिपथ टेस्ट कर सकते हो। इसके लिए बल्ब होल्डर के दोनों तारों को चित्र में दिखाए तरीके से अपने परिपथ में लगे स्विच के दोनों कीलों से दबाकर छुआओ। यदि बल्ब जल उठे तो परिपथ सही है। परिपथ सही हो जाने पर अपने टेस्ट करने वाले बल्ब होल्डर को तारों सहित परिपथ से अलग कर दो और फिर अपनी मोटर बनाने का प्रयोग आगे बढ़ाओ।

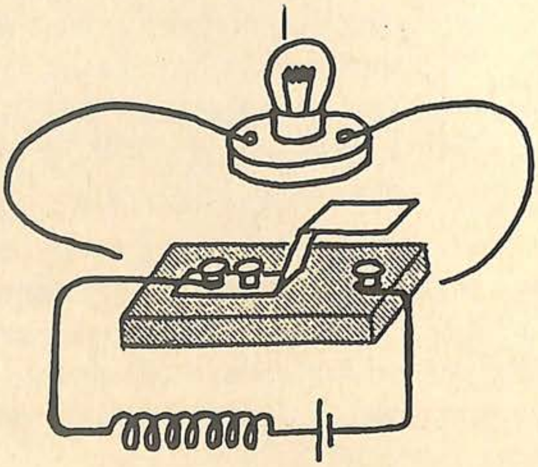

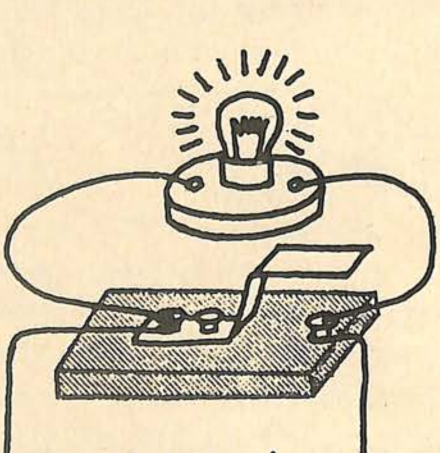

सावधान

1. यह तरीका केवल सेलों वाले परिपथ टेस्ट करने के लिए है। भूलकर भी घर, स्कूल या खेत में लगे बिजली कनेक्शन को इससे टेस्ट न करना। ऐसा करना बहुत खतरनाक है।
2. यदि सेल कमजोर होंगे तो परिपथ पूरा होने पर भी बल्ब नहीं जलेगा। ऐसी स्थिति में परिपथ में सेल बदलकर परिपथ फिर से टेस्ट करो।

पर चिपकाओ। अब जो चकती चुम्बक पत्ती से दूर है उसे चुम्बक से अलग कर **बिना पलटे** पत्ती की दूसरी भुजा की अंदर वाली सतह पर चिपका दो (**चित्र 2**)।

अब लकड़ी का एक पटिया लो। उस पर चार पिनें **चित्र** 3 में दिखाए तरीके से गाड़ो। इन पिनों पर अब कुंडली को रखकर देखो कि सुई की धुरी पर कुंडली बराबर घूमती है या नहीं। जरूरी हो तो पिनों को

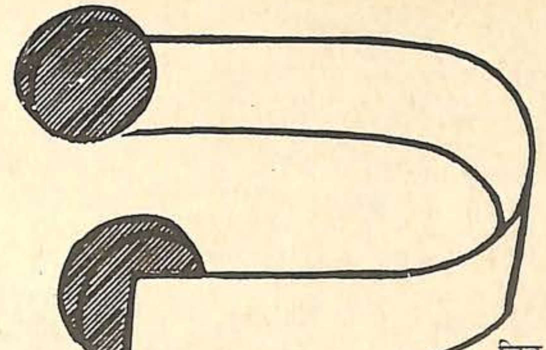

चित्र 2

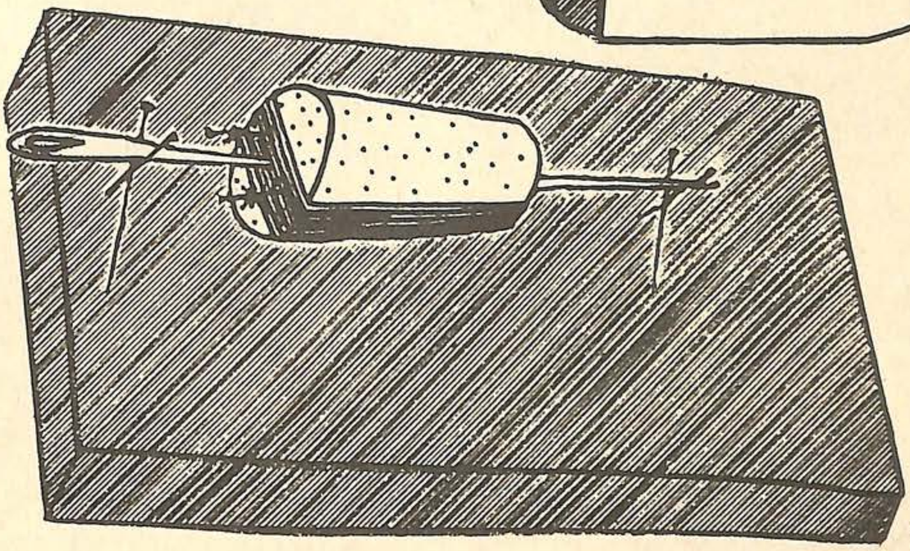

चित्र 3

इधर-उधर थोड़ा खिसका लो, जिससे कुंडली क्षैतिज रहे और उसके घूमने में कहीं रुकावट न हो।

अब कार्क के जिस ओर पिन खोंसे हैं उन्हीं की सीध में लकड़ी पर दोनों ओर दो पिन (**त** और **थ**) लम्बवत गाड़ो। इन दोनों पिनों के आगे दो और पिन (**द** और **ध**) गाड़ो।

अब तांबे के तार का 60 सेंटीमीटर लंबा एक और टुकड़ा लो, उसके दो हिस्से करके उनके सिरे अच्छी तरह साफ करो। तार के एक टुकड़े को **द** पिन पर एक तरफ से कसकर लपेट दो, फिर **त** पिन पर एक लपेटा विपरीत दिशा में दो। **त** पिन पर लपेटने के बाद तार को मोड़कर ऐसे लंबवत खड़ा करो कि उसका साफ किया हुआ भाग कार्क में लगे पिन को छुए। इसी प्रकार दूसरी ओर भी तार का दूसरा भाग लगाओ (**चित्र 4**)।

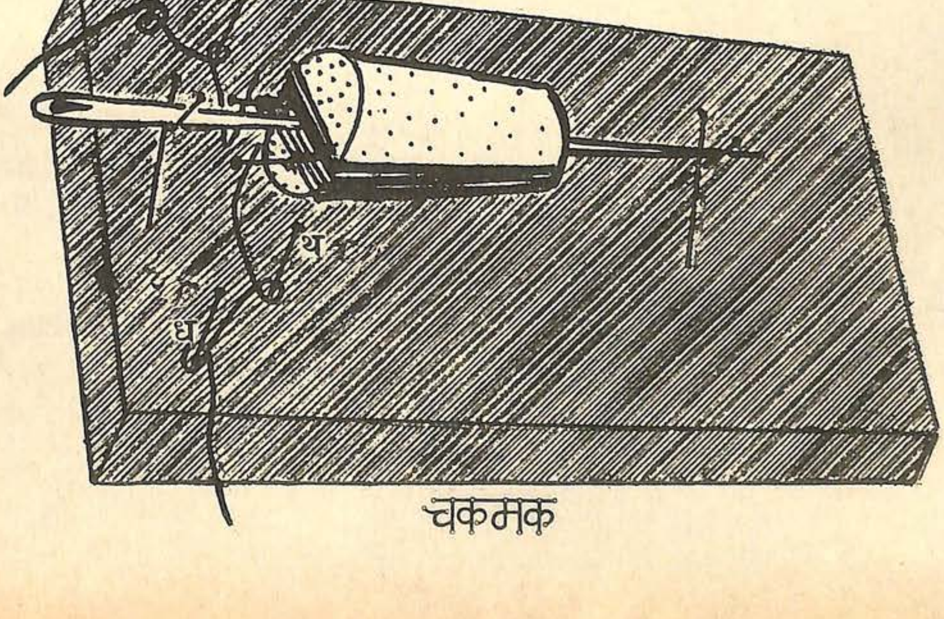

चित्र 4

अब चुम्बक सहित लोहे की पत्ती को लकड़ी के गुटके पर ऐसे रखो कि कुण्डली दोनों चुम्बकों के बीच में हो और स्वतंत्र रूप से घूम सके।

अब **चित्र 5** में दिखाया गया परिपथ बनाओ। इस परिपथ को टेस्ट करने के लिए बाक्स में बताए तरीके से बल्ब को स्विच पर लगाओ और देखो कि बल्ब जलता है या नहीं। यही अवलोकन कुंडली को अक्ष पर 180 डिग्री से घुमाकर करो। यदि दोनों परिस्थितियों में बल्ब जलता है तो तुम्हारा परिपथ सही है। बस, अब परिपथ से बल्ब निकाल दो। स्विच दबाकर और कुंडली को हल्के से घुमाकर देखो कि क्या होता है।

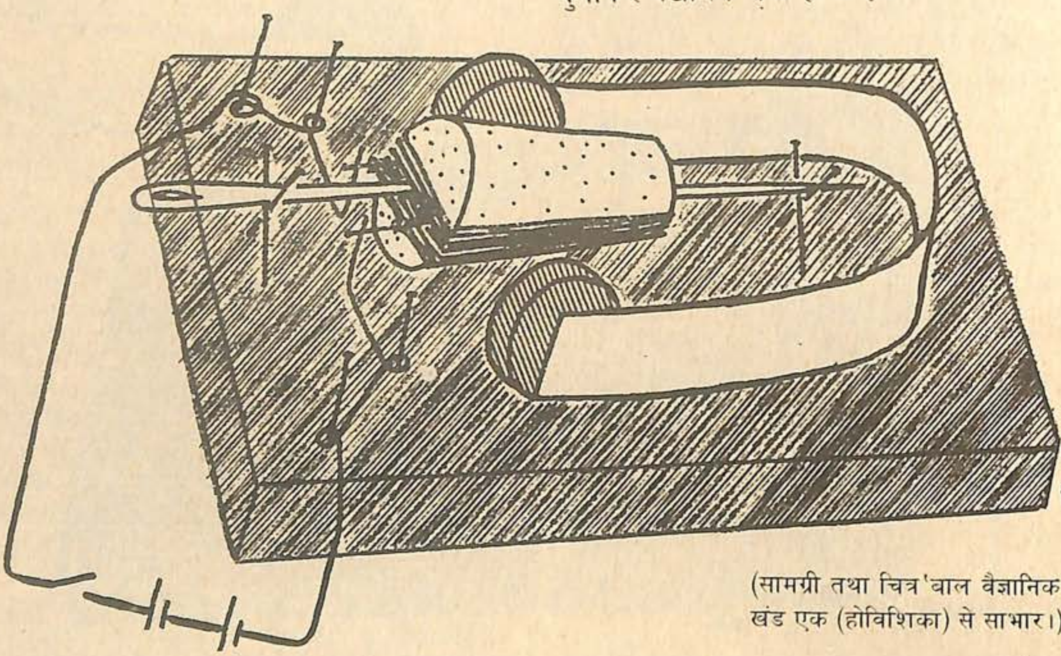

चित्र-5

(सामग्री तथा चित्र 'बाल वैज्ञानिक' कक्षा 8 खंड एक (होविशिका) से साभार।)

बिना हवा फूले गुब्बारा

जरूरी सामान : एक कटोरा, एक बोतल, बर्फ के टुकड़े तथा गरम पानी

बर्फ के छोटे-छोटे टुकड़े करके उन्हें एक कटोरे में रखो। इन टुकड़ों के बीच बिना ढक्कन की एक बोतल को गाड़ दो। कुछ देर तक उसे ऐसा ही रहने दो। ठंड से बोतल के भीतर की हवा सिकुड़ जाएगी। अब बोतल को बाहर निकाल कर उसके मुंह पर गुब्बारा चढ़ा दो। अब कटोरे में बर्फ की जगह गरम पानी (खौलता नहीं) भरो और बोतल को इस पानी में रख दो। थोड़ी ही देर बाद तुम देखोगे कि गुब्बारा फूल जाएगा। क्या कारण है, सोचो!

☐ संकेत, जयपुर

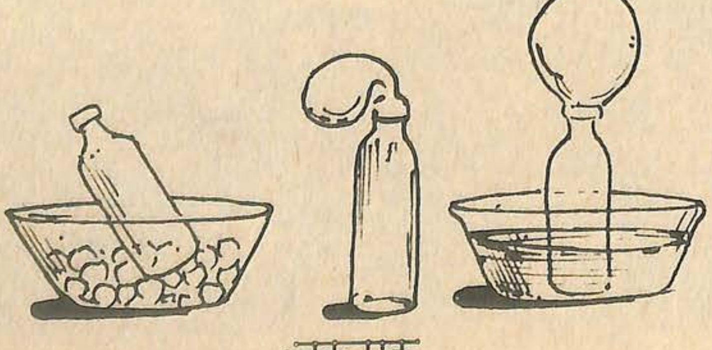

खेल खेल में : कला

विष्णु चिंचालकर

यह किन चीज़ों से बना है उसे पहिचानने का प्रयास करो। सारी की सारी तुम्हें अपने आँगन में ही मिल जाएंगी। पहचानो और बनाने का प्रयास करो।

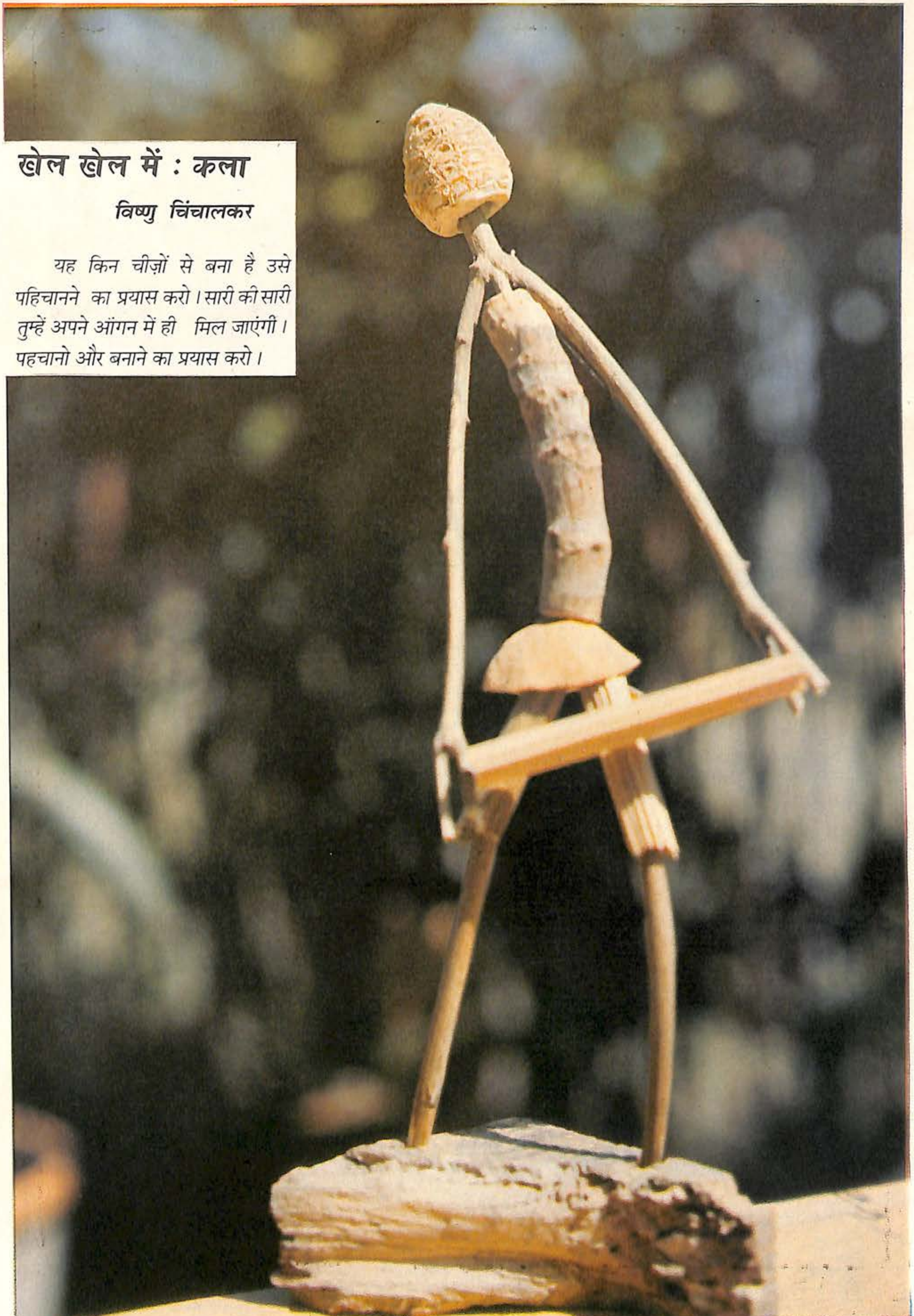

लिली के सूखे फूल ने शतुरमुर्ग का आकार ले लिया। जुलाई अंक के एक चित्र में यही आसमान में उड़ा था, याद है?

चकमक वर्ग पहेली—1

जून में प्रकाशित शब्द पहेली के प्रति तुम सबने बहुत रुचि एवं उत्साह दिखाया है। कई सारे पाठकों के हल हमें प्राप्त हुए हैं।

तुम्हारी रुचि को देखते हुए यह वर्ग पहेली माथापच्ची में नियमित रूप से देने का प्रयास करेंगे। **पर इसका हल भरकर हमारे पास भेजने की ज़रूरत नहीं है।** यह माथापच्ची करो और फिर अगले अंक में अपने हल का मिलान करना।

संकेत वाक्यों के सामने पहेली में भरे जाने वाले शब्द के अक्षरों की संख्या लिखी है, यानि वह शब्द कितने अक्षरों से बना है या बने हैं। कुछ हल तो वाक्यों में ही छिपे हैं, वाक्यों को ध्यान से पढ़ो, उल्टा-पल्टा कर देखो। कुछ शब्द पर्यायवाची हैं और कुछ.... अच्छा अगले अंक में ऐसी वर्ग पहेलियां हल करने के लिए किन बातों पर ध्यान देना चाहिए, इस पर अलग से उदाहरण सहित चर्चा करेंगे।

इस माह की पहेली *सुशील जोशी* ने तैयार की है। अगर ऐसी वर्ग पहेलियां बनाने का तुम्हारा मन हो रहा हो तो ज़रूर बनाओ और चकमक को भेजो।

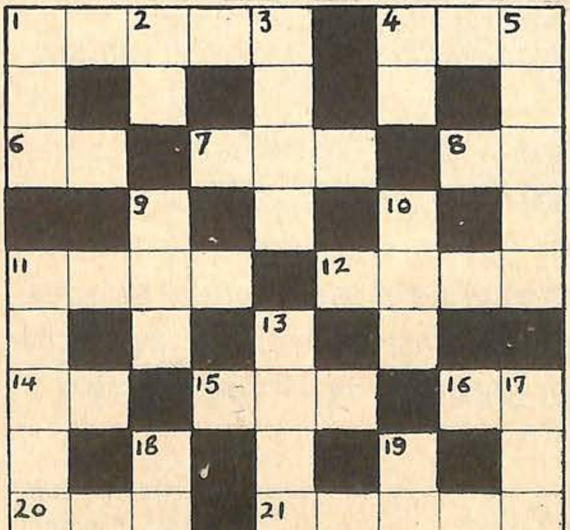

संकेत : बाएं से दाएं

1. खाने के और, दिखाने के और (2,1,2)
4. झापड़ (3)
6. किसी के न आने पर आती है (2)
7. जल का जीव (3)
8. सब उल्टे वाहन (2)
11. कृषि (4)
12. मकबरा बरगद में ऊंच नीच नहीं (4)
14. भालू (2)
15. आप के बीच आधी रोटी का आक्षेप (3)
16. धूल (2)
20. इसके भी फकीर होते हैं (3)
21. गीता जो रम बहते पानी के समान (5)

संकेत : ऊपर से नीचे

1. लिखते समय छोड़ी गई जगह (3)
2. बाल (2)
3. एक प्रकार की चट्टान (4)
4. किनारा (2)
5. अलीबाबा और.... (3,2)
9. जीभ (3)
10. बेसुरा ही गाओ, उसमें ठंडा पानी तो है (3)
11. इसको लंबे समय तक खाने से लंगड़े हो सकते हैं (3,2)
13. रोध हर की गड़बड़, अमानत (4)
17. मुर्गे की शान (3)
18. चाकू पर, एक शहर (2)
19. जननी (2)

उत्तर : अगस्त अंक के

3. घोड़े 12000 रुपए प्रति और गधे 6000 रुपए प्रति की दर से बेचे।
4. 210 और आदमी
5. चार व्यक्ति
6. पहले दिन 9, दूसरे दिन 10 किलोमीटर और आगे क्रमशः इसी तरह प्रतिदिन पिछले दिन से एक किलोमीटर अधिक चला। अंतिम यानि नवें दिन वह 17 किलोमीटर चला।
7. इस पहेली का हल अगर तुमने कर लिया हो तो हमें भेजो। सही हल भेजने वालों के नाम प्रकाशित किए जाएंगे।
8. व्यक्ति यह कथन दे कि 'मुझे गोली से उड़ा दिया जाएगा।'
9. 196
10. 14 पक्षी

नेताजी गांव में

बात उस समय की है जब हमारे ही क्षेत्र के एक विधायक महोदय प्रदेश के वनमंत्री थे और भैंरोघाट पिपरिया आए हुए थे। भैंरोघाट जबलपुर जिले की पाटन तहसील का 3000 की आबादी वाला गांव है। यह गांव राजनीतिक दृष्टि से काफी पिछड़ा हुआ दिखाई देता है। इसका प्रमाण मैं सच ही सच घटित घटना से दे रही हूं।

हमारे गांव में एक 'जिन्नत -बी' नामक मुसलमान महिला हैं, जो कि रुई के धंधे से अपना जीवन यापन चलाती हैं। वह शहपुरा वाली के नाम से जानी जाती हैं। जिस दिन नेता जी गांव में आए इस दिन वे कुछ ज्यादा ही प्रसन्न नजर आ रही थीं। प्रसन्नता का राज उस समय खुला, जब उन्होंने अपने मुख से बात उगली।

उन्हीं के शब्दों में, "मैंने सुनो कि नेताजी आ रये हैं। जहां-तां कलश जल रये हैं। बड़ी-बड़ी तैयारी हो रयी हैं। मैं खाना बनाऊतई से भगत चली आई, आके देखो तो नेता जी दिखाऊतई ने हते, सबरे आदमी-आदमी से दिखात हैं। मोरे बगल में नर्स-बाई ठांड़ी हतीं, मैंने उसने पूछो कि नेताजी कहां हैं, जो आवे बारे हते। उनने एक आदमी की ओर हाथ बढ़ा दयो, जो कि धुतिया-कुर्ता पहनें हतो और टोपी लगायें थो। मैं तो देखतई से चकित हो गई, कि अरे नेता सोई (भी) आदमी घांई (जैसे) होत, मैं तो समझत थी कि कोई देवी देवता हुइए, जब तो आदमी देंखबे खों मरे जा रये हैं। अरे जब उनने बोल्बो शुरू करो तो मैं तो मुंह पलटा खें घरे आ गई, कायकि बे सोई-आदमी घांई बोलत हते, और घरे आ कें खूब पछताई कि रोटी छोड़खें तो मैं गई, और देवी-देवता कछु ने मिले।"

□ सीमा खरे, दसवीं
भैंरोघाट (जबलपुर)

चित्र: शिवेंद्र पांडिया, भोपाल

भारत जन विज्ञान जत्था

(विवरण अगले पृष्ठ पर देखें)

इस पूरे पन्ने को चकमक से बाहर निकालकर अपने स्कूल के नोटिस बोर्ड पर या ऐसी जगह लगाएं, जिससे अधिक से अधिक लोगों को इसकी जानकारी हो सके।

भारत जन विज्ञान जत्था

2 अक्टूबर से 7 नवम्बर, 87
मध्यप्रदेश में—कब और कहां

उत्तरी जत्था

(इलाहाबाद से 4 नवम्बर को प्रवेश)

रीवा	4 नवम्बर	3-5 बजे दोपहर
सतना	4 नवम्बर	7-9 बजे शाम (रात्रि पड़ाव)
पन्ना	5 नवम्बर	8-10 बजे सुबह
छतरपुर	5 नवम्बर	11-1 बजे सुबह (भोजन)
सागर	5 नवम्बर	6-9 बजे शाम (भोजन, रात्रि पड़ाव)
विदिशा	6 नवम्बर	11-1 बजे सुबह (भोजन)

(विदिशा से भोपाल)

दक्षिणी-जत्था

(नागपुर से 5 नवम्बर को प्रवेश)

पांडुरना	5 नवम्बर	10-11 बजे सुबह
मुलताई	5 नवम्बर	1-3 बजे दोपहर (भोजन)
बैतूल	5 नवम्बर	5-7 बजे शाम
शाहपुर	5 नवम्बर	9-10 बजे रात (भोजन, रात्रि पड़ाव)
इटारसी	6 नवम्बर	9-11 बजे सुबह
होशंगाबाद	6 नवम्बर	1-4 बजे दोपहर (भोजन)

(होशंगाबाद से भोपाल)

पूर्वी जत्था

(सुहेला से 29 अक्तूबर को प्रवेश)

सारंगगढ़	29 अक्तूबर	9-11 बजे सुबह
रायगढ़	29 अक्तूबर	2-8 बजे दिन (भोजन, रात्रि पड़ाव)
चांपा/जांजगीर	30 अक्तूबर	11-1 बजे दिन (भोजन)
बिलासपुर	30 अक्तूबर	4-9 बजे शाम (भोजन, रात्रि पड़ाव)
रायपुर	31 अक्तूबर	12-9 बजे दिन (भोजन, रात्रि पड़ाव)
धमतरी	1 नवम्बर	9-10 बजे सुबह
कांकेर	1 नवम्बर	12-1 बजे दोपहर (भोजन)
जगदलपुर	1 नवम्बर	5-8 बजे शाम (भोजन, रात्रि पड़ाव)
कोंडागांव	2 नवम्बर	9-10 बजे सुबह
नारायणपुर	2 नवम्बर	1-2 बजे दोपहर (भोजन)
पाखनजोर	2 नवम्बर	4-5 बजे दोपहर

दल्ली राजहरा	2 नवम्बर	8-
दुर्ग-भिलाई	3 नवम्बर	पू
राजनांदगांव	4 नवम्बर	9-
गोंदिया	4 नवम्बर	2-
बालाघाट	4 नवम्बर	7-
सिवनी	5 नवम्बर	10-
छिंदवाड़ा	5 नवम्बर	3-
परासिया	5 नवम्बर	6-
बाबई	6 नवम्बर	12-

(बाबई से भो

उत्तर-पूर्वी

(डाल्टनगंज से 2 नवम

अंबिकापुर	2 नवम्बर	11-
चिरमिरी	2 नवम्बर	7-
मनेन्द्रगढ़	3 नवम्बर	10-
शहडोल	3 नवम्बर	6-
कटनी	3 नवम्बर	11-
जबलपुर	4 नवम्बर	5-
नरसिंहपुर	5 नवम्बर	11-
गाडरवाड़ा	5 नवम्बर	3-
पिपरिया	5 नवम्बर	7-
औबेदुल्लागंज	6 नवम्बर	10-

(औबेदुल्लागंज से

पश्चिमी ज

(आगरा से 2 नवम्ब

मुरैना	2 नवम्बर	10-
बामौर	2 नवम्बर	2-
ग्वालियर	2 नवम्बर	4-
मोहना	3 नवम्बर	9-
शिवपुरी	3 नवम्बर	1-
गुना	3 नवम्बर	7-

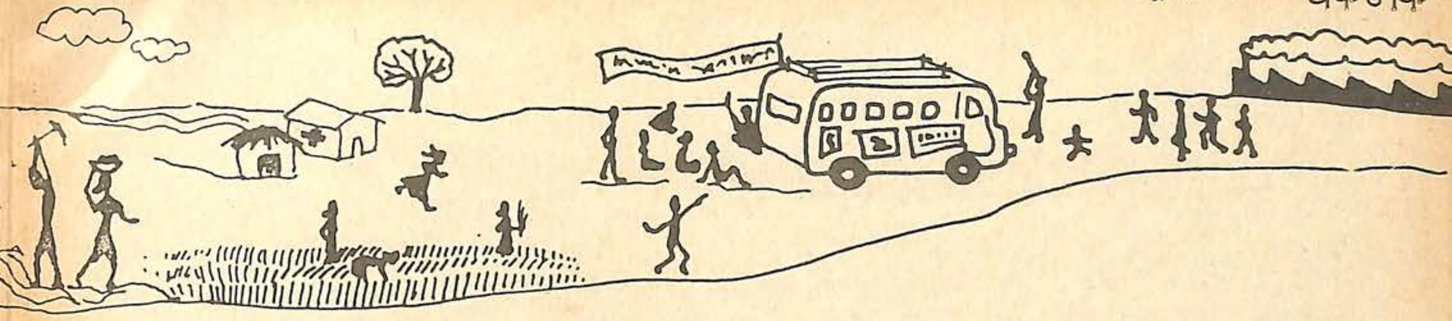

10 बजे रात (भोजन, रात्रि पड़ाव)
ा दिन (रात्रि पड़ाव, भिलाई)
11 बजे सुबह
4 बजे दोपहर (भोजन)
9 बजे शाम (भोजन, रात्रि पड़ाव)
12 बजे सुबह (भोजन)
5 बजे दोपहर
9 बजे शाम (भोजन, रात्रि पड़ाव)
2 बजे दोपहर (भोजन)
पाल)

जत्था
ार को प्रवेश)

1 बजे दोपहर (भोजन)
9 बजे शाम (भोजन, रात्रि पड़ाव)
11 बजे सुबह (भोजन)
9 बजे शाम (भोजन, रात्रि पड़ाव)
2 बजे दोपहर (भोजन)
10 बजे शाम (भोजन, रात्रि पड़ाव)
1 बजे दोपहर (भोजन)
4 बजे दोपहर
10 बजे रात (भोजन, रात्रि पड़ाव)
12 बजे सुबह (भोजन)
भोपाल)

था
र को प्रवेश)

1 बजे सुबह (भोजन)
3 बजे दोपहर
9 बजे शाम (भोजन, रात्रि पड़ाव)
10 बजे सुबह
3 बजे दोपहर (भोजन)
9 बजे शाम (भोजन, रात्रि पड़ाव)

ब्यावरा	4 नवम्बर	10-12 बजे सुबह (भोजन)
शाजापुर	4 नवम्बर	3-4 बजे दोपहर
उज्जैन	4 नवम्बर	7-9 बजे शाम (भोजन, रात्रि पड़ाव)
रतलाम	5 नवम्बर	10-12 बजे सुबह (भोजन)
झाबुआ	5 नवम्बर	2-4 बजे दोपहर
धार	5 नवम्बर	7-9 बजे शाम
	(रात्रि पड़ाव इंदौर में)	
इंदौर	6 नवम्बर	9-1 बजे सुबह (भोजन)
देवास	6 नवम्बर	2-4 बजे दोपहर
सीहोर	6 नवम्बर	7-8 बजे शाम
	(सीहोर से भोपाल)	

7 नवम्बर, 1987 : जनविज्ञान रैली भोपाल में

स्थानीय समितियां

जहां-जहां जत्था रुकेगा, वहां पर स्थानीय समितियां बनाई जा रही हैं। ऐसी हर जगह पर और उसके आसपास जत्था आने के कई दिन पूर्व से प्रदर्शनी, स्लाइड शो, चर्चा तथा अन्य जन विज्ञान संबंधित कार्यक्रम आयोजित किए जाएंगे। आयोजन स्थानीय समिति करेगी। इन कार्यक्रमों के लिए आवश्यक सामग्री स्थानीय समिति को उपलब्ध करा दी जाएगी। यह सारा आयोजन आप सबके सहयोग से ही संभव है। प्रदेश की कई संस्थाएं जैसे मध्यप्रदेश विज्ञान सभा, मध्य प्रदेश मेडीकल रिप्रेसेन्टेटिव एसोसियेशन, मध्यप्रदेश विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी परिषद आदि इस काम में शुरू से ही सक्रिय हैं। आप में से जो लोग स्थानीय समिति बनाना चाहते हैं या समिति के सदस्य बनना चाहते हैं वे अपने नाम, पते सहित इन संस्थानों के निकटतम प्रतिनिधि या निम्न पतों पर संपर्क करें :

□ एकलव्य
ई-1/208, अरेरा कालोनी
भोपाल-462 016

□ मध्य प्रदेश विज्ञान सभा
ई-5/46, अरेरा कालोनी
भोपाल-462 016

□ मध्य प्रदेश विज्ञान एवं
प्रौद्योगिकी परिषद
ई-3/3, अरेरा कालोनी
भोपाल-462 016

(अगले पृष्ठ पर जारी)

- एकलव्य
  कोठी बाजार
  होशंगाबाद-461 001
- एकलव्य
  नेहरू कालोनी
  हरदा-461 331
- एकलव्य
  सांडिया रोड
  पिपरिया-461 775
- एकलव्य
  293, विवेकानंद कालोनी
  उज्जैन-456 001
- एकलव्य
  राधागंज
  देवास-455 001
- एकलव्य
  7, एम.आई.जी. कालोनी
  धार-454 001
- एस.सी.शर्मा
  मध्य प्रदेश विज्ञान सभा
  गोपाल शीत गृह के सामने
  मनेन्द्रगढ़-497 442
- प्रमोद प्रधान
  मध्य प्रदेश विज्ञान सभा
  डिलाईट टाकीज के पीछे
  नई सड़क, लश्कर
  ग्वालियर-474 001
- वकार सिद्दकी
  मध्यप्रदेश विज्ञान सभा
  शासकीय उच्चतर माध्यमिक शाला
  दतिया-475 661
- अभय पांडे
  मध्य प्रदेश विज्ञान सभा
  के.जी.कला एवं विज्ञान महाविद्यालय
  रायगढ़-496 001
- डी.एन.शर्मा
  मध्यप्रदेश विज्ञान सभा
  कल्याण महाविद्यालय
  भिलाई-490 001
- पी. चंद्रा
  मध्यप्रदेश मेडीकल रिप्रेसेन्टेटिव एसोसियेशन
  2362, राइट टाउन
  जबलपुर-482 011
- एस.के.तालुकदार
  मध्य प्रदेश मेडीकल रिप्रेसेन्टेटिव एसोसियेशन
  इफको आफिस के पास,
  बोधा रोड
  सिविल लाइन, रीवा-486 006
- पिनाकी मुंशी
  मध्य प्रदेश मेडीकल रिप्रेसेन्टेटिव एसोसियेशन
  गायत्री मंदिर चौक, विनोबा नगर
  बिलासपुर-495 001
- एम.के.नंदी
  मध्य प्रदेश मेडीकल रिप्रेसेन्टेटिव एसोसियेशन
  दवे बिल्डिंग, नूरानी चौक, राजा तालाब
  रायपुर-492 001
- विनोद मिश्र
  जनवादी लेखक संघ
  सेक्टर-6, स्ट्रीट-70
  क्वार्टर नं. 40
  भिलाई-490 006
- राम प्रकाश त्रिपाठी
  जनवादी लेखक संघ
  94/52, तुलसी नगर
  भोपाल-462 026
- कमला प्रसाद
  प्रगतिशील लेखक संघ
  हमीदिया कालेज
  भोपाल-462 001
- अशोक गुप्ता
  जनवादी लेखक संघ
  सदर रोड भंडार के पास
  अंबिकापुर-497 001
- किशोर भारती
  पोस्ट—बनखेड़ी
  जिला—होशंगाबाद
  -461 990
- के.के.दुबे
  सेंटर आफ इंडियन ट्रेड यूनियन
  चिरमिरी कॉलरी
  चिरमिरी-497 773
- कमल महापात्र
  नेशनल रेल्वे मजदूर यूनियन
  RB III, 141 B
  डीजल कालोनी
  न्यू कटनी-483 501
- पी.के.सुकुमारन
  जनशक्ति, बी.एच.ई.एल.
  भोपाल-462 021
- ओ.पी. पायक
  बी.टी.आई.
  मंदसौर-458 001
- ए.बी. खरे
  बी.टी.आई.
  नरसिंहपुर-487 001
- दविन्दर कौर उप्पल
  पत्रकारिता एवं जन संचार विभाग
  सागर विश्वविद्यालय
  सागर-470 003
- विजय दुआ
  जी.पी.वी.कालेज
  परासिया-480 441

दिल्ली, राजस्थान तथा महाराष्ट्र में क्रमशः इन पतों पर संपर्क करें :

- दिल्ली साइंस फोरम
  B-1, दूसरी मंजिल;
  एल.एस.सी., जे-ब्लाक
  साकेत, नई दिल्ली-110 017
- एस.के.जैन
  101/2, अस्पताल रोड
  जयपुर-302 001
- लोकविज्ञान संघटना
  759/97-D, प्रभात रोड
  लेन नं. 2
  पुणे-411 004
- मराठी विज्ञान परिषद
  विज्ञान भवन, वी.एन. पुरब मार्ग
  सियोन, शिवा चूना भट्टी
  बम्बई-400 002

जलेबी

मीठी लच्छेदार जलेबी,
है कितनी रसदार जलेबी!
मकड़ी के उलझे जालों सी
अम्मी के सुलझे बालों सी
छोड़ रही है तार जलेबी
मीठी लच्छेदार जलेबी

[illegible] रंग में डूबा तन है,
रसगुल्ले की [illegible]
[illegible] जैसे खिला कमल है
[illegible] लपकने को चंचल है
[illegible] सुबह ही ताजी ताजी
[illegible] ताजा अखबार जलेबी
मीठी लच्छेदार जलेबी।

अंग्रेजी की लिपि जलेबी,
हिन्दी भाषा जैसी मीठी!
एक खिला दें खुश हो जाए,
अगर हमारी बिटिया रूठी!
दूकानों पर सजी थाल में
जैसे कुतुबमीनार जलेबी
मीठी लच्छेदार जलेबी!

☐ कैलाश मण्डलेकर

चित्र: हेमंत वायंगणकर, भोपाल

समावेश : एक रपट

एकलव्य, देवास द्वारा 6 मई से 16 मई, 1987 तक एक 10 दिवसीय कार्यशाला 'समावेश' का आयोजन किया गया था। 'समावेश' में देवास जिले की सभी तहसीलों से करीब 70 बच्चों ने भाग लिया। इनका चयन गांव-गांव जाकर स्कूलों के शिक्षकों से चर्चा करके, तथा पिछले कार्यक्रमों में सामने आए रुचि संपन्न बच्चों को ध्यान में रखकर किया गया था। स्त्रोत दल के रूप में कई व्यक्ति तथा कई संस्थाएं; प्रतिध्वनि, सबला महिला संघ, सेंडिट; दिल्ली, किशोर भारती और शहीद भगतसिंह पुस्तकालय एवं सांस्कृतिक केंद्र, पिपरिया सम्मिलित हुईं। प्रस्तुत है 'समावेश' की एक झांकी जयप्रकाश तिवारी जेपेश, देवास द्वारा:

'वीर बढ़ चलो, धीर धर चलो, दूर नहीं है किनारा' का मधुर सामूहिक स्वर मन को बरबस खींचे ले रहा है। उत्सुक निगाहें माध्यमिक विद्यालय क्रमांक 3 देवास की ओर उठ जाती हैं।

'समावेश' समाज, विज्ञान और संस्कृति का मिला-जुला रूप है। और यही हमें संकेत करना है। इसके पीछे उद्देश्य रहा है एक स्थायी जनविज्ञान समूह का निर्माण। इन दस दिन चली कई सारी गतिविधियों में नाटक, सामूहिक गीत, कठपुतली, चित्रकला, मिट्टी के खिलौने, प्रयोगशाला, प्रश्नमंच, अखबार निकालना आदि शामिल हैं। आओ देखते हैं कहां क्या हो रहा है?

विज्ञान की समझ को विकसित करने के लिए यहां कक्षाएं नहीं लगाई गई हैं। तुम कहोगे, यह भी कोई बात हुई, बिना पढ़ाए भी भला कोई कुछ सीख सकता है। तुम ही देख लो, यह कौन महिला मिट्टी को गूंथ-गूंथकर मूर्तियां और खिलौने गढ़ रही है! भई ये हैं बनखेड़ी, किशोर भारती की प्रेमलता। कछोटा कसे किसान एक हाथ में बैलों की रास थामें, दूसरे हाथ को नाई पर रखे चल रहा है और साथ में यह युवती! वह है इसकी सहभागनी, जो सृजन के नए बीज डालती चल रही है। लो, इतनी देर में तो फलों का ढेर लग गया यहां! आजकल आम की बहार है इसलिए शायद आम की सभी किस्में थोक में बनाकर रखी गई हैं।

देखो, देखो तुम्हारे हमउम्र साथी भी मिट्टी से खेल रहे हैं। उन्हें सिखाया नहीं जा रहा है, वे तो सहज रूप से कुछ सीख रहे हैं। ये माटी में माटी से खेलते हैं। यहां माटी कबीर के कुम्हार की तरह रूठती नहीं है। वह नहीं कहती, कि तू मुझे रूंधता क्यों है? वह तो इन कोमल हाथों का स्पर्श पाकर पुलक उठती है। ये कोमल तथा नन्हें हाथ कुछ गढ़ें न गढ़ें, उनके ढेला उठाकर मारने से भी कुछ न कुछ बन जाता है।

गुरूजी हाथ में टूटी चप्पल लिए खड़े हैं, उन्हें उसमें मोनालिसा दिखती है। आम की गुठली से एक बूढ़ा आदमी झांकता लगता है। यह गुरूजी विष्णु चिंचालकर की दृष्टि है। पर आश्चर्य की बात नहीं कि समावेश के तुम्हारे साथी आम की गुठली में कुत्ते के पिल्ले को बैठा देख कर खिल खिला पड़ते हैं। यह तो कल्पना की दुनिया है। गुरूजी का कहना है तुम्हें जो कुछ दिखाई दे रहा है, बस ध्यान से देखते रहो, कोई न कोई आकृति जरूर दिखाई पड़ जाएगी। मकड़ी के जाले, सूखे पत्ते, मूंगफली के छिलके, यहां तक कि जली हुई रोटी में भी दूध पिलाती मां की ममतामयी आकृति उभर आती है।

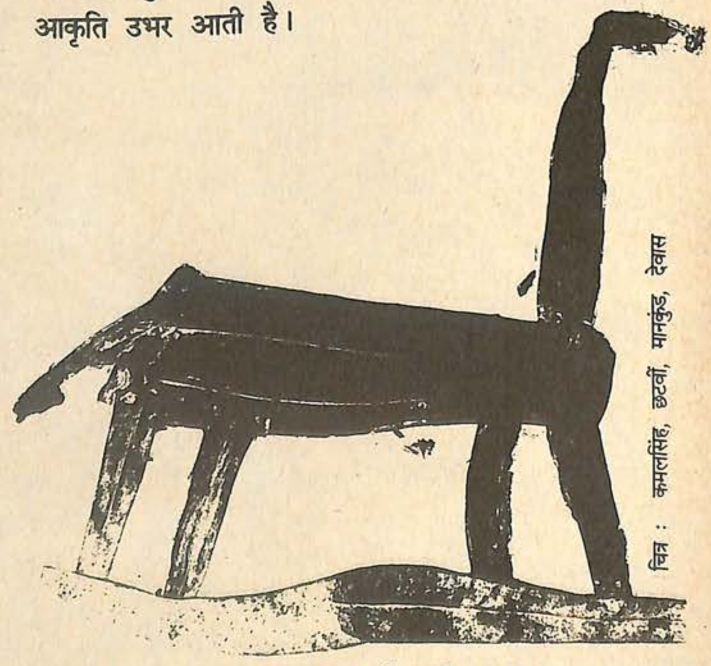

चित्र : कमलसिंह, छठवीं, मानकुंड, देवास

यह चित्र मूल रूप से यूकिलिप्टस की सूखी पत्तियों से बना है।

मैं भी बनाऊं वीडियो फिल्म

यहां बन रही हैं कठपुतलियां

खेल खेल में: कला

बाबा आग खाते हैं: चमत्कार या साधारण सी वैज्ञानिक प्रक्रिया?

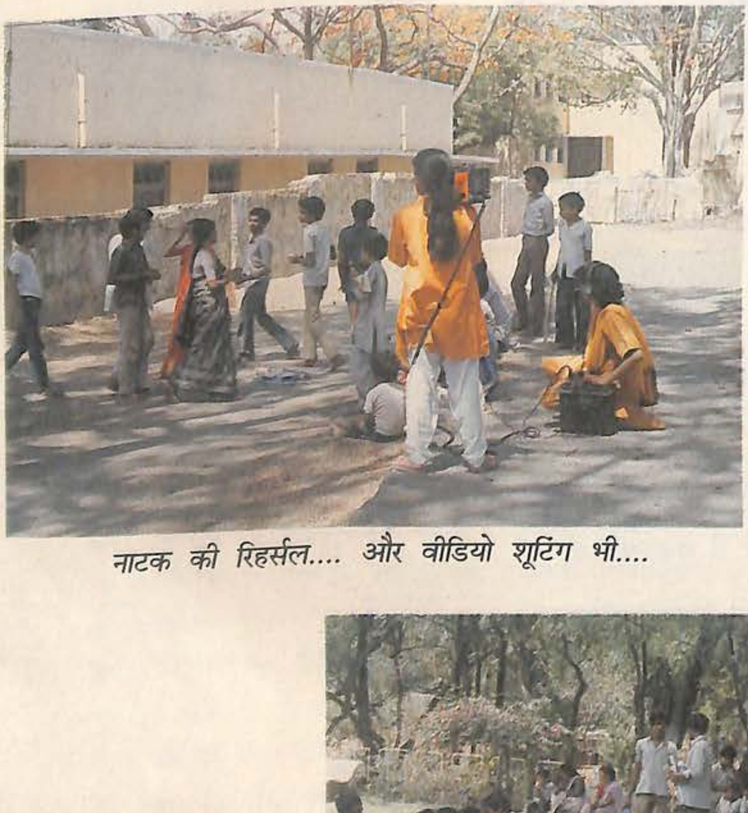

नाटक की रिहर्सल.... और वीडियो शूटिंग भी....

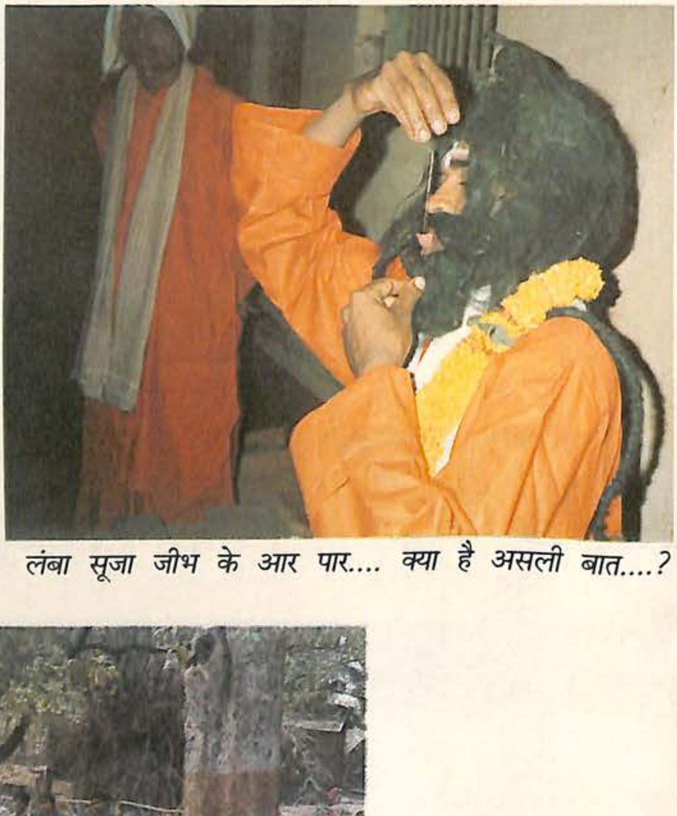

लंबा सूजा जीभ के आर पार.... क्या है असली बात....?

यही है समावेश

चित्र : अलका, रत्ना, शरत्, सेंडिट, नई दिल्ली

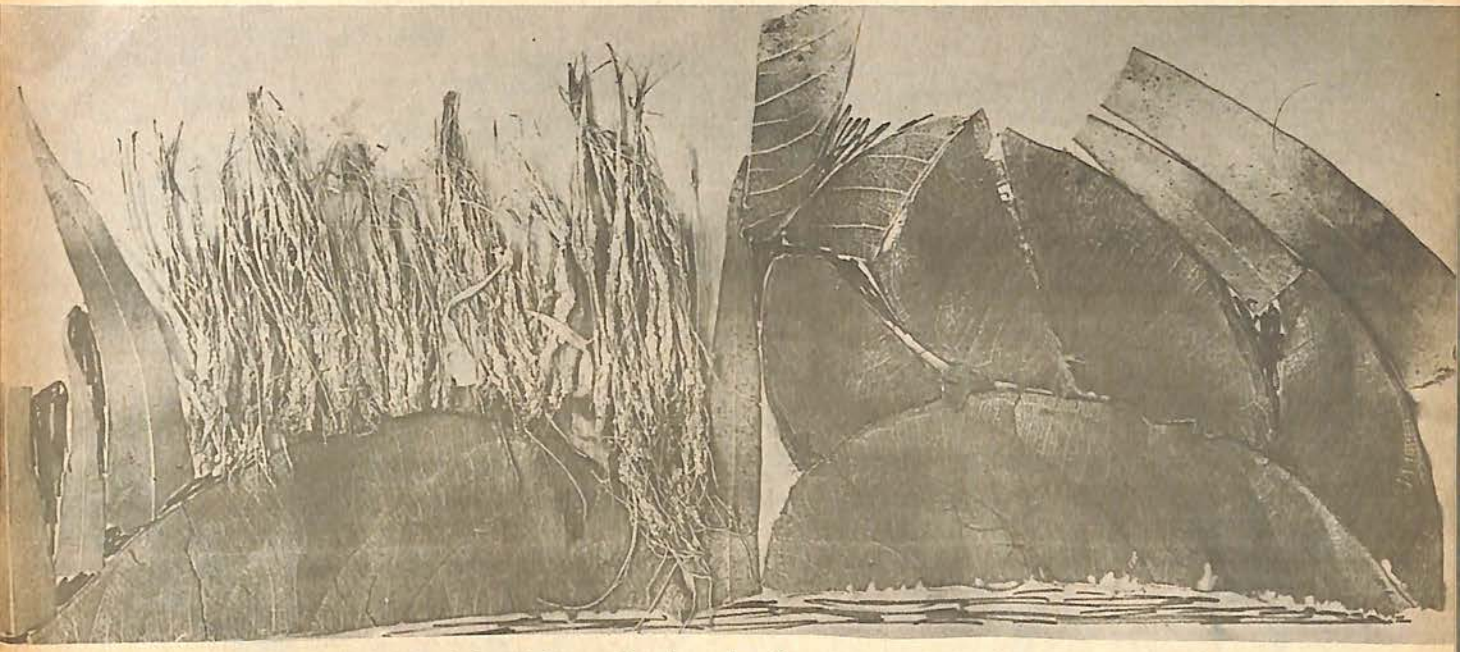

इस चित्र को बनाने वाले ने यूकिलिप्टस, और पीपल के पत्ते तथा नारियल के रेशों का उपयोग किया है।

लगता है बाहर मैदान में कुछ गड़बड़ हो गई है। बहुत हो-हल्ला हो रहा है, नारे बाजी हो रही है। हड़ताल का 'सीन' आंखों में घूम जाता है। बीच में एक हट्टा-कट्टा नौजवान खड़ा है। लगता है सारी करामात इसी की है। अरे, घबराने की कोई बात नहीं! यह उधम बाजी भी समावेश का हिस्सा है। ये ज़नाब अंकुर मंच, उज्जैन के हफीज़ भाई हैं। वे ही इसका संचालन कर रहे हैं। ये भी अपनी धुन के पक्के हैं। जब सारे दांव पेंच अजमाने के बाद लगा कि गांव के ये 'झिझकू' जल्दी मंच पर आने वाले नहीं। तब हफीज़ भाई ने उनकी झिझक तोड़ने के लिए यह नाटक रच दिया और उसी का नतीजा सामने है। अब सभी पूरे जोश से नाटकों में भाग ले रहे हैं। नाटकों के चार समूह बने। प्रत्येक समूह को एक विषय दिया गया। विषय पर खूब चर्चा हुई, कहानी बनी, फिर कहानी को नाटक में बदला गया। यह सब तुम्हारे साथियों ने ही किया है। जो नाटक के नाम पर अपने कमरों में तबीयत खराब होने का नाटक रचकर दुबके रहते थे, आज वे ही अत्यधिक उत्साह से भाग ले रहे हैं।

चलो, समावेश के दूसरे सिरे पर चलते हैं। यहां विज्ञान के रोचक प्रयोग हो रहे हैं। और थोड़ा आगे चलो, ये हैं अलीगढ़ के फरहान मुजीब! ये तरह-तरह के मुखौटों का अभ्यास करा रहे हैं। इनके साथ कुछ और लोग भी हैं। ढेर सारा रंगीन कागज, चिंदियां लुगदी, गोंद लिए बैठे हैं। अरे भई, ये तो कठपुतली का चक्कर है। ये देखो यहां तरह-तरह की कठपुतली बन रही हैं। अभी उनकी कहानियां भी बनेंगी और फिर परदा तनेगा और परदे के पीछे से ढोलक की ढम.... ढम....! बस कठपुतली का नाटक शुरू! अब आएगा मज़ा।

ये इधर क्या हो रहा है? यहां तो कक्षा-सी लगी है! यह वास्तव में प्रश्न मंच का कार्यक्रम है। यहां प्रश्न पूछे जाते हैं और फिर उन पर बहस होती है, पक्ष-विपक्ष के उत्तर आते हैं। यहां विज्ञान, स्वास्थ्य, पर्यावरण जैसे विषयों पर पोस्टर प्रदर्शनी भी लगाई गई है। देखो, सोचो और समझो।

सुबह-सुबह समावेश में संगीत सभा लगती है। प्रतिध्वनि, दिल्ली के शुभेन्दु कभी साज या कभी केवल आवाज से अपनी नाट्य मुद्राओं के साथ समूह में गा रहे हैं। यह सुबह से शुरू होकर रात के दो-तीन ब्जे तक चलता रहता है। इसमें मदद करती हैं सबला संघ दिल्ली की सदस्याएं। सामूहिक गीत गाने का तरीका सीखा और ग़ाया। गीत भी तैयार क़राए गए।

दिन भर की तमाम गतिविधियों के बाद शायद तुमने सोचा होगा कि लोग रात में थककर सो जाते होंगे! नहीं....! चलो खिड़की से झांककर देखते हैं। यहां तो बड़े से कागज पर कुछ लिखा जा रहा है।

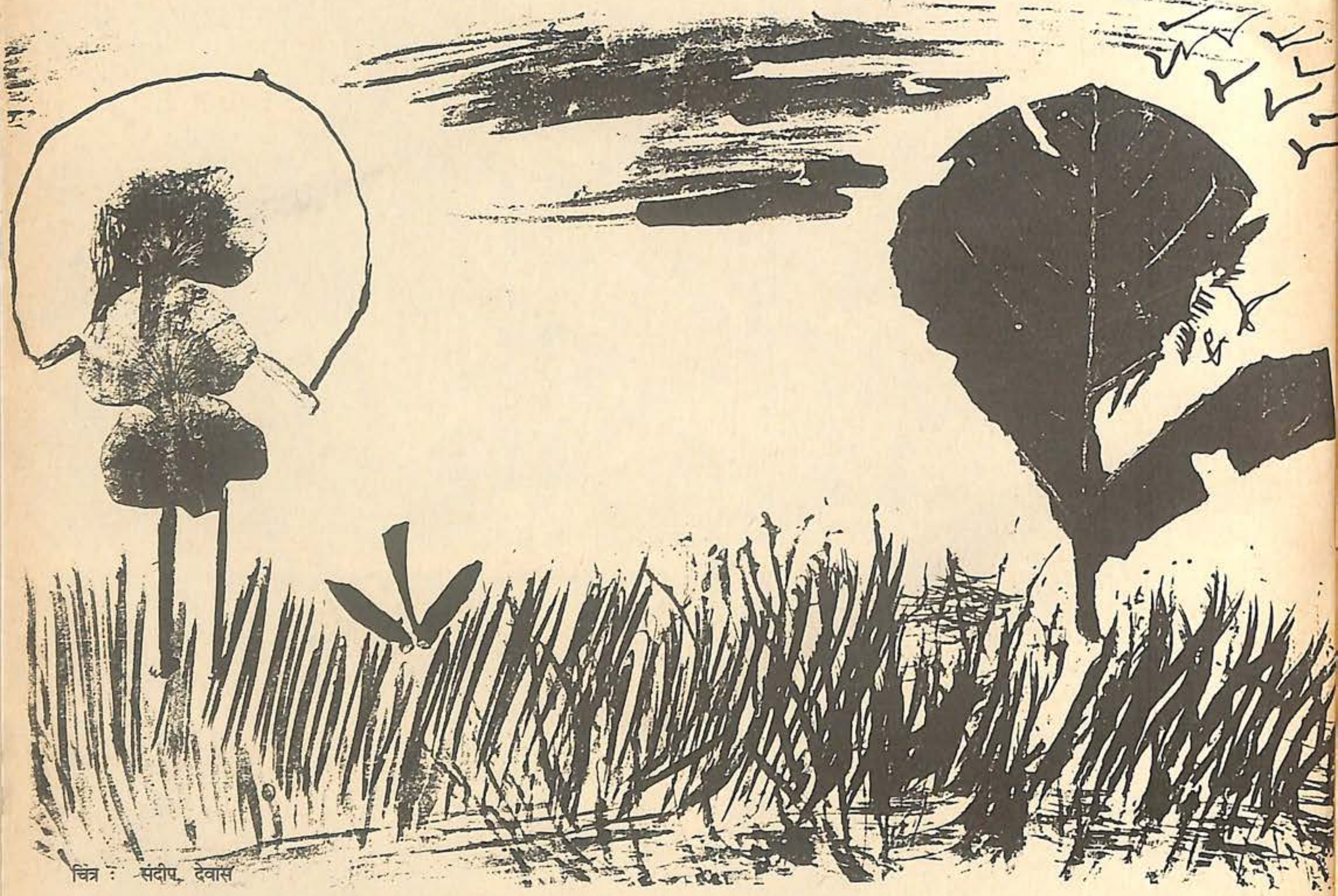

इस चित्र में रस्सी कूदती लड़की किसी फूल की पंखुड़ियों से बनी है। बड़ा-सा पेड़ एक पत्ता है और बाकी चीजें रंग से बनाई गई हैं।

यह **समावेश टाइम्स** तैयार हो रहा है। कल दीवार पर चिपका मिलेगा पढ़ने के लिए।

अब चाहे कठपुतली का नाटक हो या दूसरी तरह का नाटक। सभी की विडियो शूटिंग की जा रही है। सेंडिट दिल्ली की यह टीम सिर्फ फिल्म ही तैयार नहीं कर रही, बल्कि वीडियो फिल्म बनाने की तकनीक और बारीकियां भी समझा रही है। ये देखो सेंडिट के अलावा समावेश की एक टीम खुद शूटिंग कर रही है। शाम को ये फिल्म वी.सी.आर. की मदद से टी.वी. पर दिखाई जाएंगी। ताकि नाटकों या अन्य गतिविधियों की समीक्षा हो सके।

ये समावेश में तपस्वी बाबा कहां से आ गए। बाबा मंच पर आ रहे हैं, जय-जयकार हो रही है। क्यों न हो बाबा मन के रहस्य को बता सकते हैं। वे साधारण साधक नहीं हैं, तुम न मानो तो स्वयं देख लो। बाबा दुष्ट आत्माओं को भस्म करके शुध्द आत्माओं के प्रकाश में सारा वातावरण आलोकित कर रहे हैं। वे लोहे के सरिए से ज़बान छेद सकते हैं, आग पर चल सकते हैं, सभी चकित हैं। पर यह क्या! बाबाजी का भांडा फूट गया। पोल खुल गई। बताया गया कि यह चमत्कार कोई भी कर सकता है, सिर्फ थोड़ी जानकारी और हाथ की चालाकी चाहिए!

समावेश के आखरी दिन सब मिलकर इंदौर गए। चिड़िया घर देखा और घूमे-फिरे। दस दिन में खूब दोस्ती की, मस्ती की और फिर घर को लौट गए!

• •

घर से समावेश तक

मेरा नाम ओम प्रकाश है। मैं सुबह चार बजे उठा और उठने के बाद स्नान किया। फिर मैंने दो-चार कपड़े सिले जिसके कारण घर से निकलने में लेट हो गया। अधिक जल्दी करने पर भी आते-आते गाड़ी हमारे सामने से निकल गई और फिर टिगरिया छोटा से हम पैदल चल दिए। ऊपर से गरमी गिर रही थी क्योंकि गरमी का टाइम हो चुका था। रास्ते में नाला आया नाले के तट पर कुछ गऊओं के झुंड घास-भूसा चर रहे थे। हमने दो गायों को लड़ते देखा। उनमें से एक गाय हल्की और भूखी प्यासी थी। उस भूखी गाय को तंदुरुस्त गाय ने भूमि पर गिरा दिया, इससे उस गाय के पैरों को कुछ चोट आई और एक पैर टूट गया।

गाय चराने वाले ग्वाले गांव गए और गाड़ी बैल लेकर आए। उस गाय का किसी ने पैर पकड़ा और किसी ने कान। किसी ने मुंह पकड़ा और किसी ने पूंछ व शरीर पकड़कर उस गाय को गाड़ी के अंदर सुला दिया। फिर ग्वाले गाय को गांव की ओर ले गए। गांव में गाय को पट्टे चढ़ाए।

वहां से हम चले तो रास्ते में हमें एक कुआं मिला और उस कुएं में पानी तो है लेकिन कम। गरमी के मौसम में पानी हर कुओं में सूख जाता है। लेकिन उस कुएं में पानी रहता है, परंतु कम। उस कुएं का मालिक जितना बुध्दिमान है उतना ही अनाड़ी भी। क्योंकि उसने अपने कुएं पर सिंचाई की हरी मिर्च भी लगाई और छोटा-छोटा गन्ना भी। हमें हरे भरे खेत देखकर प्रसन्नता होती है।

आगे बढ़े तो हमें एक नगरी रास्ते में आती दिखी। इस का नाम है सुमरा खेड़ी। लेकिन अब उसका नाम बदल दिया है। उसका नाम अब पारवतीपुरा है। फिर हम वहां से आगे चले, तो हमें रास्ते में कई प्रकार के वृक्ष दिखाई दिए। जैसे आम, पीपल, इमली, बबूल, करंज का पेड़ आदि। पेड़ क्या काम आता है। आम हमें गरमी के मौसम में आम खिलाता है। और इमली गरमी के मौसम में इमली। ऐसे अलग-अलग पेड़ के अलग-अलग फल होते हैं।

फिर हम क्षिप्रा में आ पहुंचे तो एक दो पहलवानों ने हम से झगड़ने की कोशिश की। लेकिन हमने उनको झगड़ने का कोई रास्ता नहीं दिया। फिर हम जल्दी-जल्दी देवास आए तो हम माताजी की टेकरी पर चढ़ गए और चारों ओर देखा। टेकरी के ऊपर से जिस ओर देखो उस ओर हरा-भरा दिखता है। हमें इधर-उधर देखकर बहुत खुशी हुई। और हमारे दिमाग में यह बात गूंज उठी कि इतने वृक्ष हैं और भी वृक्ष लगाएं जाएं तो अच्छा।

इसके बाद हम एकलव्य संस्था में आ गए। उसी दिन शाम को चर्चा हुई। दोस्ती की। सभी के साथ हम मिल-जुलकर रहे।

□ ओम प्रकाश
टिगारिया छोटा, देवास

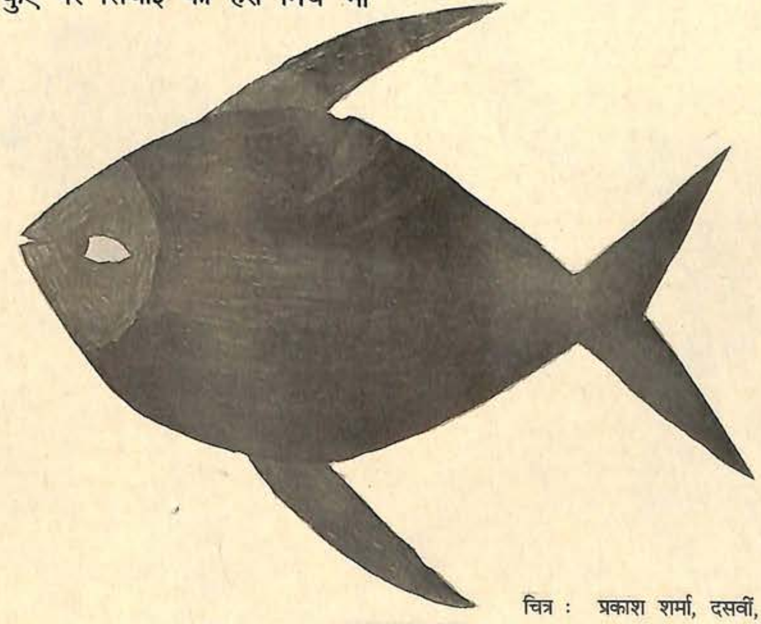

चित्र : प्रकाश शर्मा, दसवीं, देवास

बातचीत: *फरहान भाई से*

■ *आपका नाम?*

□ फरहान मुजीब।

■ *आप कहां से आए हैं, एवं आप क्या करते हैं?*

□ मैं अलीगढ़ से आया हूं एवं वहां मैं अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय में भौतिक विज्ञान पढ़ाता हूं।

■ *आप 'एकलव्य' से कैसे जुड़े?*

□ ऐसा है, मैं दो वर्ष पूर्व भोपाल में तीन दिवसीय संगोष्ठी में आया था जो शिक्षा से सम्बंधित थी, मैं इस संगोष्ठी में आपके साथियों से प्रभावित हुआ और बस!

■ *आप समावेश में कैसे आए?*

□ अलीगढ़ में मुझे आपके साथी अनवर भाई से पता चला कि देवास में ऐसा शिविर लग रहा है। हमें खत मिला और अब आपके साथ में हैं!

■ *आपकी क्या रुचियां हैं?*

□ मुख्य रूप से चित्रकला उसके बाद लोगों से मिलना अच्छा लगता है किन्तु खाना बनाना, संगीत, बागवानी विशेष रूप से पसन्द है।

■ *यहां समावेश में आपने क्या किया?*

□ आप लोगों के साथ ही काम किया है विशेष रूप से चित्रकला में, इसके अलावा हर गतिविधि में भाग लिया।

■ *बच्चे के साथ आप कब से काम कर रहे हैं?*

□ नहीं भाई, यह मेरा पहला अनुभव है।

■ *कैसा लग रहा है आपको यह अनुभव?*

□ पहला अनुभव (प्रसन्न मुद्रा में) मुझे मज़ा आ गया।

■ *आपको क्या पसंद नहीं?*

□ जोर से हंसते हुए—कंजूस लोग क्योंकि जो लोग पैसे का संचय करते हैं तो मुझे अच्छा नहीं लगता। पैसा उतना ही होना चाहिए जितना आवश्यक हो। मुझे वे लोग भी कतई पसंद नहीं जो कुछ भी नहीं जानते किन्तु ऐसा प्रदर्शित करते हैं मानो महाज्ञानी हों। और इससे भी खराब बात है कि जो अपनी गलतियों से नहीं सीखते। मुझे प्लास्टिक भी पसंद नहीं।

■ *आप क्या पहनना पसंद करते हैं?*

□ खादी, क्योंकि यह बहुत आरामदायक है। टेरीलीन, पोलियस्टर एवं मशीन से बने कपड़े मुझे पसंद नहीं।

■ *आप बच्चों के साथ अलीगढ़ में कुछ करना चाहेंगे?*

□ हां भाई, इच्छा तो बहुत है परन्तु ऐसे शिविर करने के लिए बहुत साथियों की आवश्यकता होती है और मेरे साथ इतने साथी नहीं हैं जितने यहां काम

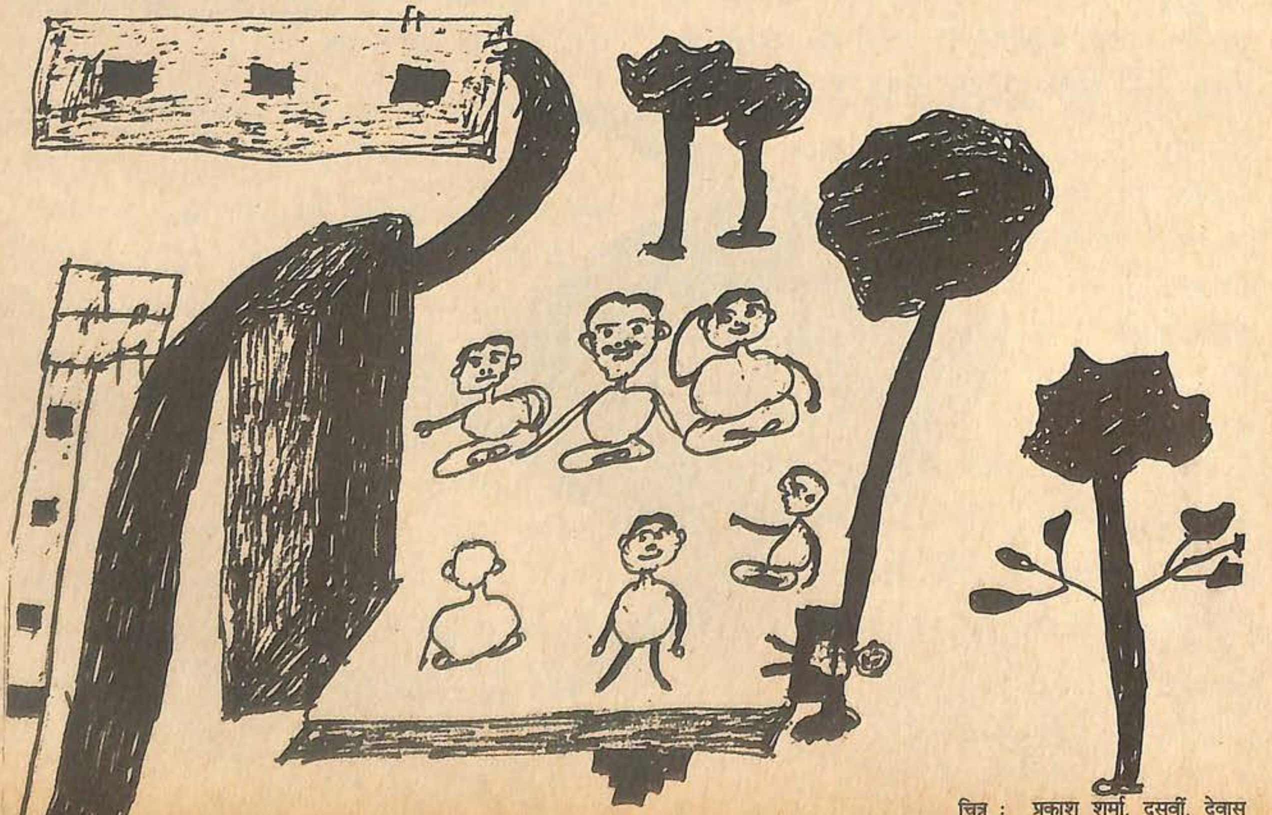

चित्र : प्रकाश शर्मा, दसवीं, देवास

कर रहे हैं और अगर करना ही पड़े तो आपको बुलाएंगे! आएंगे ना? (हमसे ही प्रश्न)

■ *जरूर, समावेश के बारे में क्या ख्याल है?*

□ मैं तो चाहूंगा कि हिंदुस्तान के हर कोने में ऐसे शिविर लगें ताकि हर बच्चा कुछ सीखे।

■ *फरहान भाई, आपको किसी से डर भी लगता है?*

□ डर! जी हां, मुझे मशीनों से बहुत डर लगता है क्योंकि मुझे इनकी तकनीक समझ नहीं आती।

■ *अगर आपको आगे बुलाएं तो क्या आएंगे?*

□ जरूर, अगर समय और आरक्षण मिल गया आने जाने का (फरहान भाई को जाते वक्त काफी दिक्कतें हुई थीं आरक्षण मिला नहीं)।

■ *और अंत में कोई राय...?*

□ नहीं भाई, मैं किसी को राय नहीं देता, अलबत्ता मेरी शुभकामनगएं आपके साथ हैं और आपने जो मुहब्बत दी है उसे ताउम्र नहीं भूलूंगा!

(रीता राठौर और संदीप नाईक द्वारा।)

(बिलकुल ठीक पहचाना! ये वही फरहान मुजीब हैं जिनका बनाया चित्र फरवरी, 87 अंक का मुख पृष्ठ था। इसके अतिरिक्त अगस्त, 87 में भी फरहान भाई के बनाए चित्र प्रकाशित हुए हैं।)

दो भाई

एक बुढ़िया थी। उसके दो लड़के थे। बड़े का नाम मिश्रीलाल और छोटे का नाम हरि था। दोनों अलग-अलग रहते थे। छोटे हरि के यहां एक लड़की थी, उसका नाम था घायली। मिश्रीलाल आलसी था और हरि बहुत कमाता था।

एक बार हरि कुछ पैसे लाया। मां से कहा, जमीन लीप पोत दे। घायली से कहा, जा तेरे बाबा के यहां से पाई ला। वह गई और बोली, पाई दे दो। उसके बाबा ने कहा, पाई का क्या करेगी। घायली बोली, पैसा नापेंगे। इतना पैसा कहां से आया, तो घायली बोली, कमाकर लाया। मिश्रीलाल ने पाई दे दी।

हरि पैसा नापने लगा तो मिश्रीलाल पहुंच गया। उसने पूछा, कितने पाई हैं। हरि बोला, दस पाई कलदार। मिश्रीलाल ने कहा, मुझे इसमें से तीन पाई देना पड़ेगा। हरि ने कहा, मैं तो बड़ी मुश्किल से पैसा कमाकर लाया हूं और तुझे दे दूं। मैं तो नहीं दूंगा। दो पाई दे सकता हूं। मिश्रीलाल ने कहा, नहीं मैं तो तीन पाई ही लूंगा। हरि ने कहा, नहीं दूंगा। ऐसा दो-तीन बार हुआ तो मिश्रीलाल गुस्सा होकर चला गया।

मिश्रीलाल ने सोचा इसका बदला लिया जाए। हरि को उसने पानी में डुबोने की सोची। उसने कुछ गांव वालों को साथ लेकर हरि को एक कोठी में बंद कर दिया और उसे डुबाने के लिए लुड़काते हुए ले चले। नदी किनारे पहुंचकर उन्होंने सोचा हाथ, पांव, मुंह, धोकर पानी पीकर आते हैं। वे चले गए।

नदी किनारे एक आदमी बकरियां चरा रहा था। वह उस कोठी के पास गया और बोला कि भैया तुम तो कोठी में बंद हो, क्यों। हरि ने कहा, मैं इसलिए बंद हूं कि मेरा यह सातवां विवाह है। तेरा विवाह नहीं हुआ है तो तू उसमें बंद हो जा। उसने कहा, हां, मेरा विवाह नहीं हुआ है, मैं इस कोठी में बंद होता हूं। वह कोठी में बंद हो गया। और हरि बकरियां लेकर चल पड़ा। थोड़ी देर बाद मिश्रीलाल और उसके साथी आए और उन्होंने कोठी को नदी में धका दिया।

मिश्रीलाल खुश था कि हरि मर गया। अब मैं ही पैसा कमाऊंगा। इतने में हरि 10-15 बकरियां लेकर घर आया। सब बोले, क्यों रे हरिया तेरे को तो हमने नदी में डुबा दिया था और तू तो बकरियां लेकर आ गया। हरि बोला, भैया मुझे कुछ आगे और धकाते तो मैं गाय लेकर आता। जितना आगे धकाते उतना ही बड़ा पशु लेकर आता।

मिश्रीलाल ने सोचा साला दुष्ट बच गया। मिश्रीलाल ने उसकी सारी बकरियां मार डालीं। हरि उदास हो गया। उसने सब बकरियों की खाल निकाली और सुखाकर बेचने चला। जंगल में उसे 4 आदमी आते दिखे तो वह डर के मारे एक पेड़ पर चढ़ गया। वे चारों असल में चोर थे। वे कहीं से चोरी करके आए थे। उस पेड़ के नीचे बैठकर वे चोरी के माल का

हिस्सा बांट कर रहे थे। एक चोर बोला, अगर मुझे कम हिस्सा दिया तो बिजली गिर जाएगी। इतने में हरि ने होशियारी दिखाई और चमड़ा जोर से बजाया। चोरों ने सोचा बिजली गिरी और वे माल छोड़कर भाग गए।

हरि पेड़ से उतरा और उसने सारा माल बटोरा और घर आ गया। मां ने पूछा इतना पैसा कहां से लाया। उसने कहा चमड़ा बेचकर। घायली से बोला, जा तेरे बाबा से पाई मांगकर ला। घायली पाई लाई। मिश्रीलाल ने हरि से पूछा, ये पैसे कहां से लाया। उसने कहा, चमड़ा बेचकर।

मिश्रीलाल घर गया और सब गाय, भैंस मारकर चमड़ा सुखाया और बाजार के लिए चल पड़ा। बाजार में चिल्लाता फिरा। पर कोई चमड़ा लेने को तैयार नहीं। एक चमार ने लिए पर बहुत कम पैसे दिए। उसे बहुत गुस्सा आया। घर जाकर उसने हरि का घर जला दिया। हरि बहुत रोया।

हरि ने सारी राख बोरों में भरी और बैल गाड़ी में रखकर बेचने चल दिया। रास्ते में एक सेठ-सेठानी जा रहे थे। सेठानी बहुत थक गई थी। सेठानी ने सेठ से कहा, मैं बहुत थक गई हूं, मुझे इस गाड़ी में बिठवा दो। सेठ ने कहा, हऊ बैठवा दूंगा। सेठ ने हरि से कहा, ऐ गाड़ी वाले भैया हमारी सेठानी थक गई है, इसे गाड़ी में बिठा ले। हरि ने कहा बिठा लूंगा, लेकिन एक बात है मेरे इन बोरों में गेहूं, ज्वार आदि भरा है। ये ठीक से बंधे हैं। अगर एक भी खुल गया तो सब थैले राख बन जाएंगे। अगर राख बन गए तो ये सब बोरों में पैसे भरवा लूंगा। ये बात मंजूर हो तो बिठा दो। सेठ ने कहा मंजूर है।

सेठानी बैठ गई लेकिन कुछ दूर जाने पर एक बोरे का मुंह खुल गया और राख गिरने लगी। हरि ने कहा मैंने तो पहले ही कहा था। सेठ बेचारा फंस गया। उसे बोरों को पैसों से भरना पड़ा।

हरि पैसे लेकर घर आ गया। मिश्रीलाल ने पूछा, ये पैसे कहां से लाया। हरि ने सारा किस्सा बताया। मिश्रीलाल ने अपने घर में आग लगाई और राख बोरों में भरकर बाजार बेचने चला गया। बाजार में उसे कोई खरीददार नहीं मिला। वह समझ गया कि हरि ने उसे बेवकूफ बनाया है। पर वह इस बार हरि से कुछ न बोला और अपने घर चला गया।

☐ बाबूलाल चौधरी

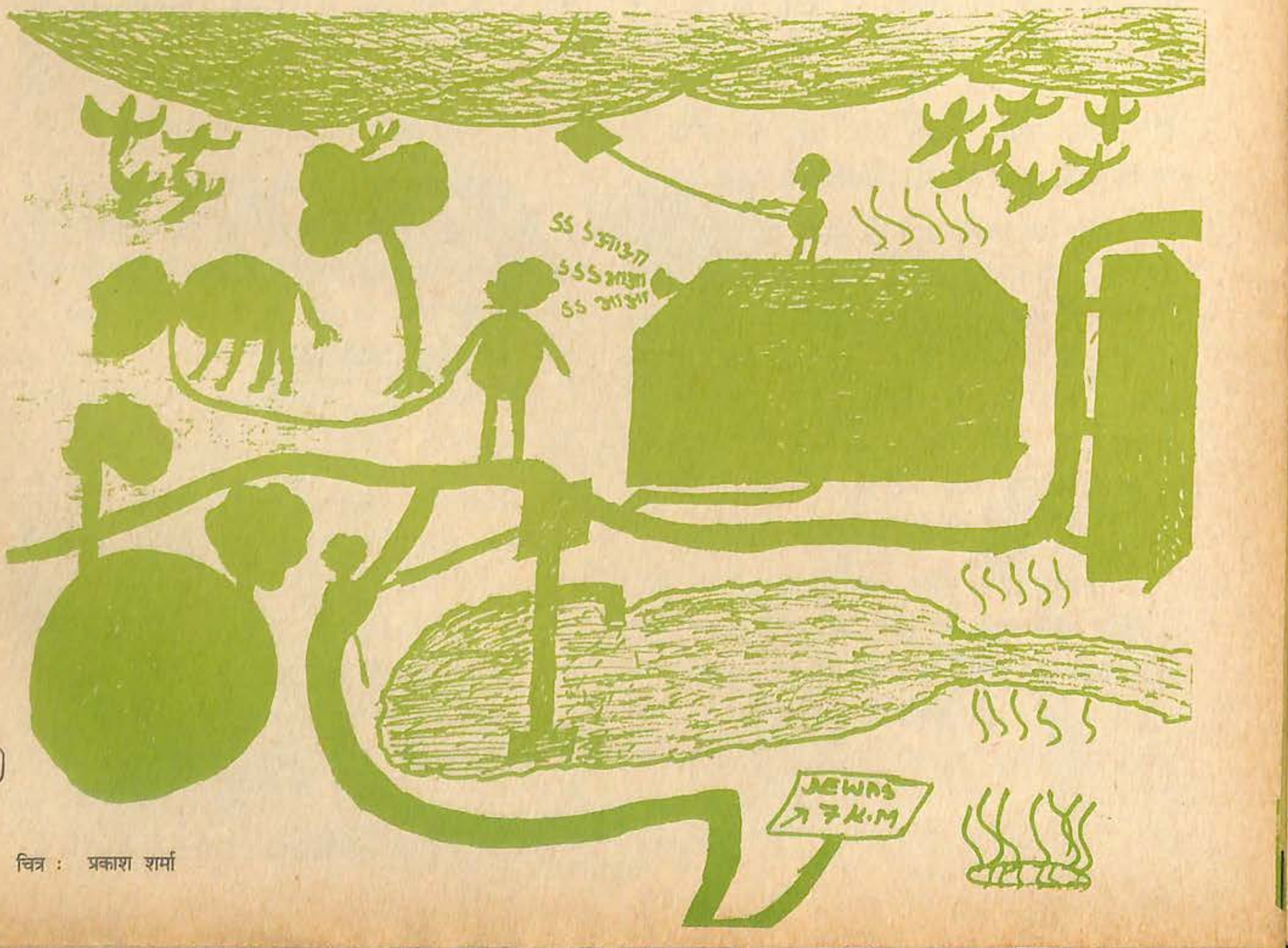

चित्र : प्रकाश शर्मा

यह कविता समावेश में सागरमल, हरिभूषण जैन, रामगोपाल सोलंकी, अर्जुन, रूपेश जोशी रूनू तथा फरहान ने मिलकर लिखी है। इस कविता का प्रेरणा स्त्रोत एक पोस्टर पर बना जिज्ञासु बच्चा है जो एक उड़ती चिड़िया को देख रहा है। इस कविता को बनाते हुए सबने दो-दो पंक्तियां जोड़ी हैं।

गुड्डू की कल्पना

गुड्डू बैठा खिड़की के पास
और बनाए मन में आस
काश! वो चिड़िया आ जाए
मेरे संग खूब बतियाए

कहां-कहां वो जाती है
न जाने कितनों से मिलती
जहां जी चाहे बैठ जाती
इधर-उधर नजर घुमाती

कोई नहीं रोकने वाला
मेरे भी गर पंख होते
न रोज स्कूल जाना पड़ता
और दिमाग ये घिसना पड़ता

उड़ते-फिरते धूम मचाते
हल्ला-गुल्ला शोर मचाते सभी
मीठे-मीठे फल खाते
रोज सुबह बहुत मजे आते

डाली-डाली कूद-कूद कर चहचहाते
मैं प्यारे बोल से सबको बुलाता
सबके मनको मैं बहलाता
रोज सुबह आसमान में उड़ता

जाने कितनी जगह बैठता
करता देश-देश की सैर
अंदर का कुछ बाहर देता
बाहर का कुछ अंदर लाता

बाहर उड़-उड़कर मैं जाता
बच्चों के लिए दाना लाता
एक-एक दाना उन्हें चुगाता
बादल भीतर उड़-उड़ जाता

दूर गगन से देख धरा को
मन ही मन मुस्काता जाता
दुनिया के झगड़ों से दूर
गाता सुख पाता भरपूर

गुड्डू चिड़िया बन नहीं सकता
सपनों से मन अपना भरता
काश अगर मैं चिड़िया होता
काश अगर मैं चिड़िया होता!

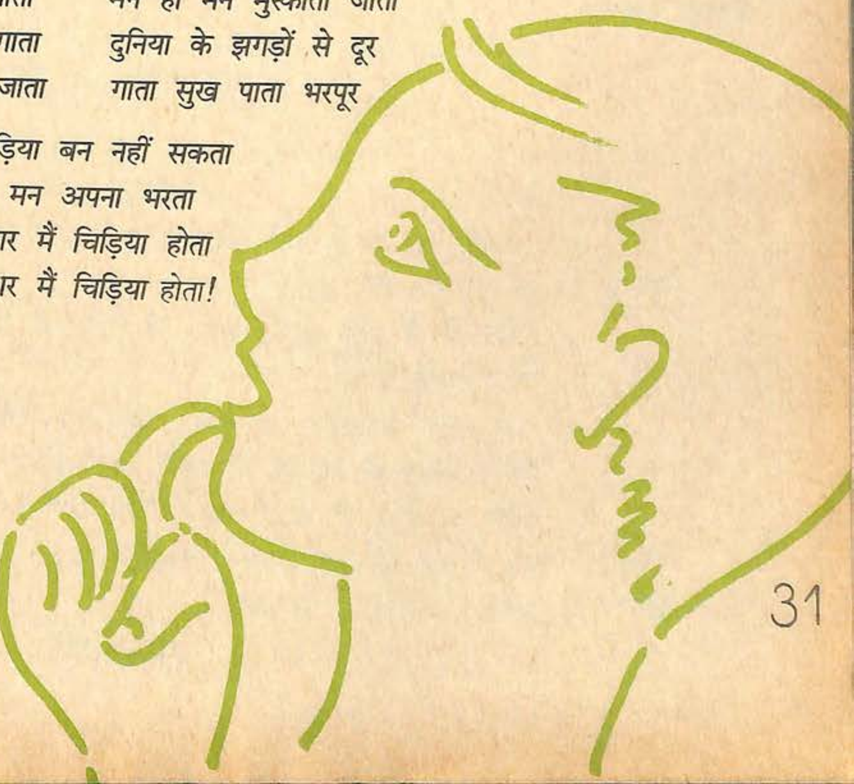

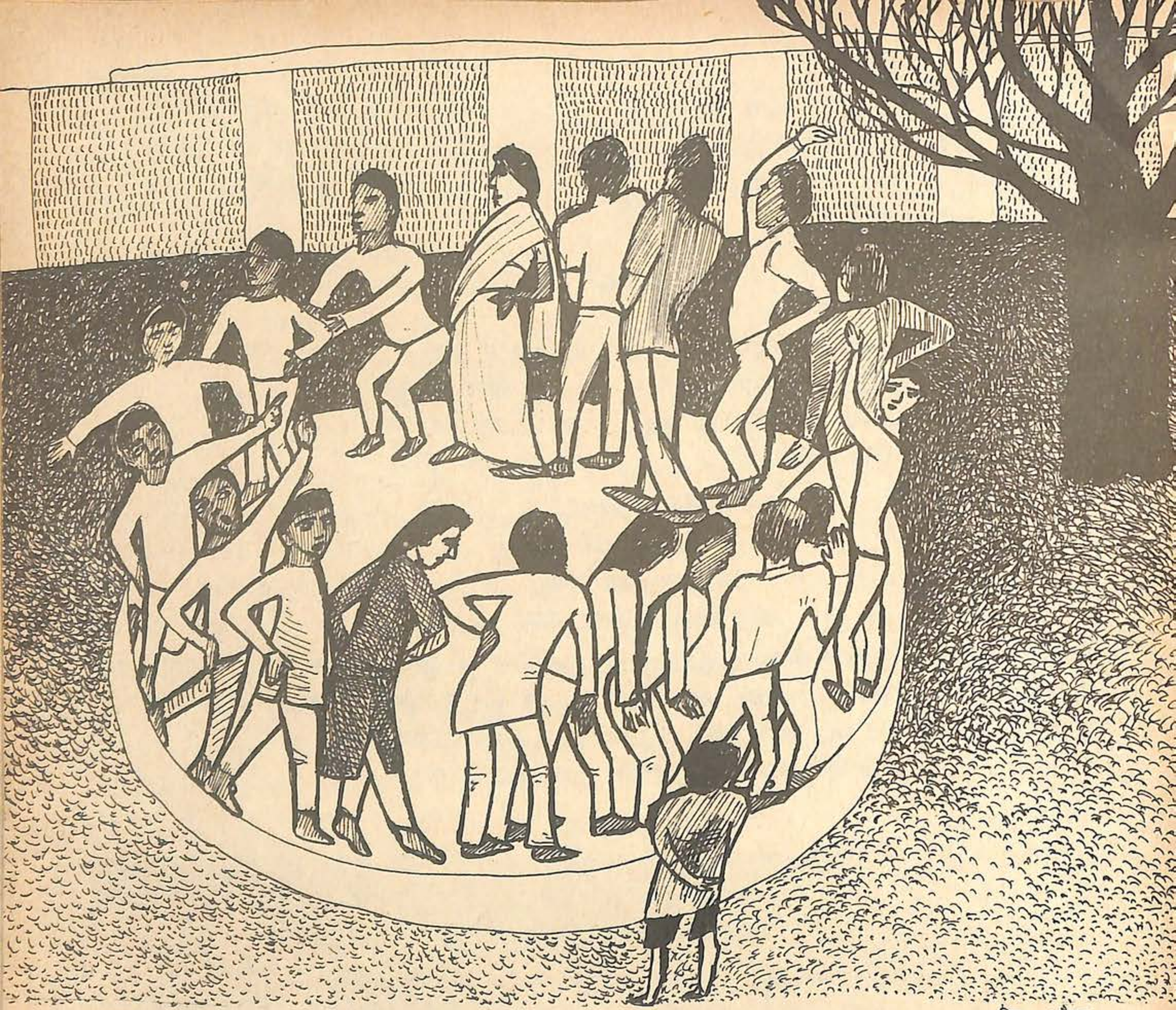

चित्र : कैरन

नुक्कड़ नाटक

जन स्वास्थ्य और दवाई

(पहला दृश्य)

(नाटक के सभी पात्र मिलकर एक घेरा बनाकर घूमते हुए गाते हैं।)

सभी: जन स्वास्थ्य और दवाई....

(घेरे में से एक व्यक्ति बीच में खड़ा हो जाता है, फिर सभी उस को घेरकर गाने लगते हैं।)

...ये हमारे अस्पताल, न पूछो इनका तुम हाल... ये हमारे अस्पताल.. डाक्टर पैसा कमाते, रोगियों की जान बैठे-बैठे खाते... करते हमारा इलाज... ये हमारे अस्पताल....!

(घेरे के बीच में खड़ा व्यक्ति चिल्लाता है।)

पहला: ऐ.... ऐ....ये कोई तुम्हारा थियेटर टाकीज है क्या.... ये तो हमारा जिला अस्पताल है।

दूसरा: दवाई.... टॉनिक.... विटामिन....!

तीसरा: *(चीखकर गिरता है)* आ.... आ....!
चौथा: सलाईन....!
पांचवां: ईंजेक्शन.... बड़े.... बड़े.... ईंजेक्शन!
छठवां: आखिर तुम लोगों को क्या हो गया है?
तीसरा: डॉक्टर, मेरे बच्चे को बचा लीजिए!
पहला: इसे सलाईन चढ़ेगी!
तीसरा: पर पैसा कितना लगेगा?
पहला: पैसा....! तुम्हें पैसा प्यारा है या बच्चा?
पांचवां: आखिर यह सब क्या हो रहा है?
दूसरा: तुम्हें मतलब!
सातवां: डॉक्टर मेरी बहन की तबीयत बहुत खराब है।

(एक लड़की चीख कर गिर जाती है।)

पांचवां: रियेक्शन!

(दूसरा दृश्य)

(पात्रों में से कुछ आरी चलाते हैं, कुछ महिलाएं घट्टी पीसती हुई गाती हैं....)
आओ गौरी बाता कर लो.... अपन दोई जनी.... ।

दूसरा: हमने बनाए देश में बड़े-बड़े मकान, लेकिन हमें, हमें सर छुपाने के लिए एक छत भी नहीं मिली!
तीसरा: हमने खोदे देश में बड़े-बड़े नलकूप लेकिन हम प्यासे हैं।
छठवां: दवा फैक्टरी में काम करते-करते, मेरे फेफड़े खराब हो गए।
सातवां: हमने उगाया देश में ढेर सारा अनाज, लेकिन हमें खाने को रोटी नहीं।

(पांचवां और छठवां गाते हैं।)

....सिर्फ हंगामा खड़ा करना मेरा मकसद नहीं,
*मेरी कोशिश है कि ये सूरत बदलनी चाहिए!!**

(तीसरा दृश्य)

(डॉक्टर एवं एक एजेंट बात कर रहे हैं और बाहर मरीजों की कतार लगी है। तीन महिलाएं डॉक्टर के पास जाती हैं।)

सातवीं: डॉक्टर साहब, म्हारा बच्चा के बचाई लो, सुबह से रोय रियो है।
पहला: चलो.... चलो.... बाहर जाओ, अभी हम बात कर रहे हैं।
पांचवीं: डॉक्टर साहब ....!

(डॉक्टर हाथ के इशारे से भगा देता है।)

छठवीं: डॉक्टर साहब मेरे बच्चे को तीन दिन से दस्त लग रहे हैं। मैं आपके पांव पकड़ती हूं। इसे जल्दी अच्छा कर दो।
पहला: 'मेक्साफार्म' दे दो।
छठवीं: पर देख तो लीजिए।
पहला: अभी हम बात कर रहे हैं।

---
* दुष्यंत कुमार

(तीनों महिलाएं बाहर आ जाती हैं।)

पांचवीं: समझ में नहीं आता, आखिर क्या किया जाए!

छठवीं: किया क्या जाए, जैसा चल रहा है, चलने दो।

पांचवीं: दीदी.... यह तुम क्या कह रही हो, क्या हमारा यह फर्ज है कि हम इन गलत चीज़ों से समझौता कर लें।

सातवीं: तो हम कई करें बेणजी, म्हारे तो इन डॉक्टर से डर लगे। कई उल्टी-सीधी दवा.... !

पांचवीं: बकवास बंद करो, देखती नहीं हम पर कितना अत्याचार हो रहा है। हमारे देश का संविधान दो भागों में बंट गया है। अधिकार अमीरों के और कर्त्तव्य हम गरीबों के हाथ।

सातवीं: तो हम कई करा बेणजी?

पांचवीं: हर आदमी ने अपनी जरूरत के मुताबिक संविधान को अपनी जेब में रख लिया है।

सातवीं: हां, यह तो सही बात है।

छठवीं: जिधर देखो, उधर धोखा, झूठ, फरेब, अत्याचार। कुल मिलाकर जंगल का कानून बना जा रहा है।

सातवीं: मतलब....!

पांचवीं: बात साफ है जिसकी लाठी उसकी भैंस! आप स्वास्थ्य को ही लीजिए!

छठवीं: इस देश में स्वास्थ्य है ही कहां!

(उधर डाक्टर के कमरे में एक आदमी कराहते हुए प्रवेश करता है।)

मैं हिंदुस्तान हूं, पीले उदास चेहरों का हिंदुस्तान। आज़ादी के बाद भी यहां की भोली....

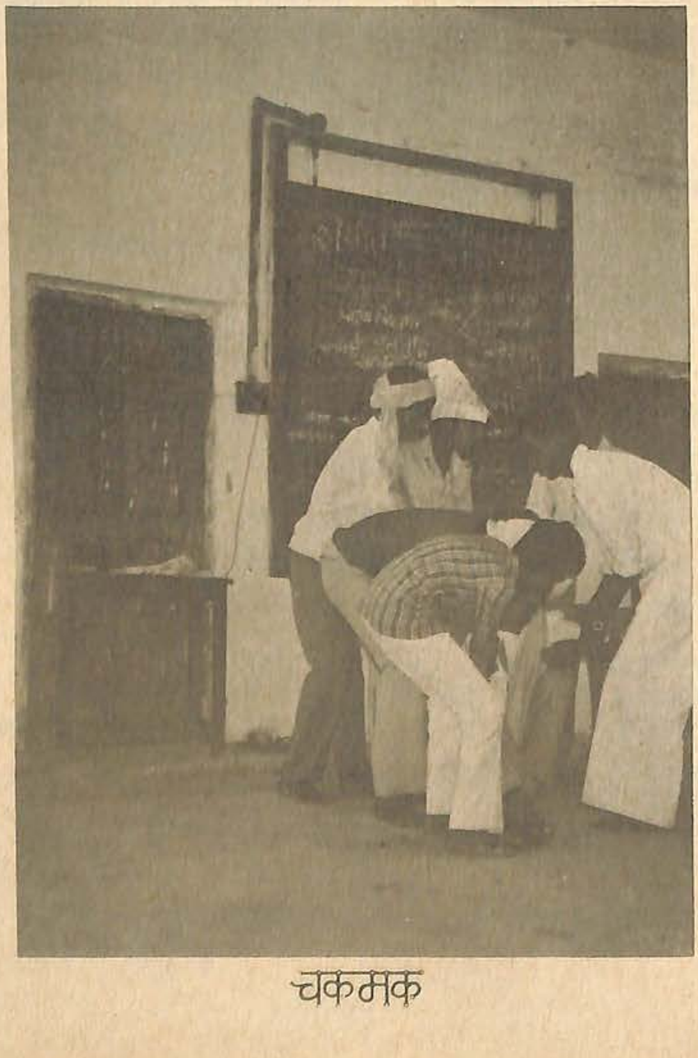

मासूम जनता को लूटा जा रहा है। हर पल दस्त से बच्चे मर रहे हैं। हर पल एक टी.बी. मरीज मर रहा है, और हजारों गांव में पीने का पानी नहीं, खाने को रोटी नहीं है, इस देश में। ये चंद मुट्ठी भर लोग करोड़ों गरीबों का शोषण कर रहे हैं।

(चीखकर गिर पड़ता है।)

(चौथा दृश्य)

सातवां: इतनी सारी दवाईयां मिलती हैं, अस्पतालों में, लेकिन हमारे लिए नहीं। वे तो गांव के नेता, सरपंच, जमींदारों आदि के लिए हैं। उन्हें तो मुफ्त में दी जातीं हैं लेकिन हम गरीबों को तो वार्डबॉय दूर से ही भगा देता है।

पांचवां: पर कहें किससे, कोई सुनता ही नहीं अपनी। प्राइवेट में जाएं तो उसकी पतलून जितनी लंबी चिट्टी लिख देता है और जेब से बड़ा पैसा छुड़ा लेता है।

दूसरा: हो गई भाई अपनी दवाई, पहले ही घर में बारह मनक हैं खाने को, एक और है आने को! ***(सब एक साथ गाते हैं।)***

"सारे जहां से अच्छा
हिंदोस्ता हमारा.... हमारा।
रहने को घर नहीं है
सारा जहां हमारा.... हमारा।।"

पांचवीं: देखती हो दीदी.... इन अमीरों ने दवाईयों के नाम पर कितनी लूट मचा रखी है।

छठवीं: हां, एक ही दवाई अलग-अलग नाम से और अलग-अलग लेबिलों में बेची जा रही है।

पांचवीं: यही हाल तो टॉनिकों और विटामिन का है। जो टॉनिक हम लेते हैं, वह सिर्फ हमारे दिल को तसल्ली पहुंचाता है।

छठवीं: हां, वरना आयरन जैसी चीज़ मैथी की सब्जी में मिलती है, वह टॉनिकों में कहां!

पांचवीं: यही हाल तो दस्तों को लेकर है। हमारे देश में हर साल लाखों बच्चे दस्त के कारण मर जाते हैं।

सातवीं: ऐसा क्यों होता है?

पांचवीं: हमारी गलतियों से, हम उन्हें गोली खिलाते हैं, पानी नहीं पिलाते, जबकि दस्त का मतलब है, शरीर में पानी की कमी।

छठवीं: हां, इसका सही इलाज है एक गिलास पानी में एक मुट्ठी शक्कर तथा चुटकी भर नमक डालकर दस्त के मरीज को पिला दो।

सातवीं: क्या कहा दीदी। दस्त रोकने के लिए एक गिलास पानी में मुट्ठी भर शक्कर और चुटकी भर नमक।

छठवीं: हां, बिलकुल ठीक कहा!

सातवीं: ठीक है।

पांचवीं: इन मुनाफाखोरों ने हमारे देश में लूट मचा रखी है। जब हमारे देश में सिर्फ 250 दवाईयों की ही जरूरत है तब इन मुनाफाखोरों ने 63,000 दवाईयां क्यों निकालीं?

छठवीं: फिर मुनाफाखोर.... मुनाफाखोर कैसे रह जाएंगे। ये हिन्दुस्तान है दुनिया के नक्शे पर शायद हमारा देश इसीलिए अपनी पहचान बचाए हुए है!

सातवीं: अब जरूरत है कि हम सब एक साथ संगठित होकर इन सबके खिलाफ सोचना शुरू करें।

पांचवीं: हां, इसकी पहली शर्त है हमारे सामाजिक माहौल में बदलाव।

छठवीं: यह कैसे संभव है।

पांचवीं: सोए हुए पानी में सिर्फ एक कंकड़ फेंकना ही काफी है।

(पांचवीं एवं छठवीं गाती हैं।)

"कैसे आकाश में सुराख हो नहीं सकता,
*एक पत्थर तो तबीयत से उछालो यारो!**

(सभी पात्र घेरा बनाकर गाते हैं।)

हम मेहनत कश जग वालों से
जब अपना हिस्सा मांगेंगे
एक खेत नहीं, एक देश नहीं
हम सारी दुनिया मांगेंगे....
जो खून बहे, जो बाग उजड़े
जो गीत दिलों में कत्ल हुए।
हर कतरे का हर गुंचे का
हर गीत का बदला मांगेंगे। * **

(नारा लगाते हैं।)

सभी: स्वास्थ्य सेवा, हमारा अधिकार है।

(पांचवां दृश्य)

(सभी नाचते हुए गाते हैं।)

हैया औ हैया
जोर लगे भैया (2)
मजदूर की जिंदगी
घुन लगे भैया (2)

दूसरा: हमें मालूम है, अपनी बीमारी का कारण, वह एक छोटा सा शब्द है।

तीसरा: जिसे सब जानते हैं, पर कहता कोई नहीं।

चौथा: जब बीमार पड़ते हैं, तो बताया जाता है।

पांचवां: सिर्फ तुम्ही (डॉक्टर) बता सकते हो हमें.... जनता के पैसे से बने....

छठवां: बड़े-बड़े मेडीकल कालेजों में खूब सारा पैसा खर्च करके, दस साल तक, डाक्टरी की शिक्षा पाई है तुमने।

दूसरा: तब तो तुम हमें अवश्य अच्छा कर सकते हो।

पांचवां: क्या सचमुच तुम हमें स्वस्थ कर सकते हो।

सातवां: तुम्हारे पास आते हैं जब, हमारे बदन पर बचे चीथड़े खींचकर कान लगाकर सुनते हो तुम, हमारे नंगे जिस्मों की आवाज और खोजते हो कारण शरीर के भीतर।

आठवां: पर अगर एक नजर हमारे शरीर के चिथड़ों पर डालो तो वे शायद तुम्हें ज्यादा बता सकेंगे कि क्यों घिस-पिट जाते हैं हमारे शरीर और कपड़े।

तीसरा: बस एक ही कारण है, इन दोनों का वह एक छोटा सा शब्द है जिसे सब जानते हैं, पर कहता कोई नहीं।

पांचवां: तुम कहते हो ***(चीखकर)।***

दूसरा: कंधे का दर्द टीसता है नमी और सीलन की वजह से।

---

* दुष्यंत कुमार

* * फैज़ अहमद फैज़

चौथा: डॉक्टर.... ।

छठवां: तुम्हीं बताओ, यह सीलन कहां से आई।

तीसरा: बहुत ज्यादा काम और बहुत कम भोजन ने कमजोर कर दिया है हमें।

पांचवां: नुस्खे पर लिखते हो! वजन बढ़ाओ, यह तो वैसा ही है जैसा दलदली घास से कहो कि वह खुशक रहे।

सातवां: डॉक्टर.... तुम्हारे पास कितना वक्त है? हम जैसे गरीब लोगों के लिए हमें मालूम है।

(पात्र चौथे को छोड़कर सभी गिर पड़ते हैं।)

चौथा: तुम्हारे घर के कालीन की कीमत पांच हजार मरीजों से मिली फीस के बराबर है।
(सभी उठते हैं) बेशक तुम कहोगे इसमें तुम्हारा कोई दोष नहीं!

तीसरा: हमारे घर की दीवार पर छाई सीलन भी यही कहानी दोहराती है।

सभी: हमें मालूम है अपनी बीमारी का कारण, वह एक छोटा-सा शब्द है, जिसे सब जानते हैं, पर कहता कोई नहीं।
वह है गरीबी.... गरीबी.... गरीबी....! *

(दृश्य छठा)

(सभी घेरा बनाकर खड़े हो जाते हैं। एक लड़का एक बच्चे को उठाए घेरे के बीच बैठकर रोने लगता है।)

पांचवां: *लो एक बच्चा और मर गया, खून पसीने की कमाई, एक-एक बूंद की कमाई से बढ़ता हुआ वह बच्चा, इस देश की गलत योजनाओं की बलि चढ़ गया। हमारे लिए क्या जरूरी है? लाखों रुपए का विज्ञापन या ज़रूरी दवाईयों का उत्पादन। यदि हमने अपने आसपास का माहौल नहीं सुधारा तो ये बच्चे, इसी तरह मरते रहेंगे.... इसी तरह मरते रहेंगे.... ।*

सभी गाते हैं—

दुनिया के बाजार....
मौत बिक रही सरे आम....
कौन है, इसका दोषी....
और कौन है जिम्मेदार....
दवा के बदले होता....
टेलीविजन का निर्माण
दो पैसों की दवाओं के
दस रुपए हैं दाम....
दुनियां के बाजार....
मौत बिक रही सरे आम.... !

(यह नुक्कड़ नाटक समावेश में बने नाटक समूहों में से एक समूह ने तैयार एवं प्रस्तुत किया।)

---

* पांचवे दृश्य के संवाद मूल रूप में बर्टोल्ड ब्रेख्त की एक कविता है (देखो चकमक का दिसंबर, 85 अंक)

समावेश टाइम्स

कठपुतली पोस्टर प्रदर्शनी आज से
स्थान कमरा नं.
समय -
दूरदर्शन-रविवार
फिचर फ़िल्म. रंग बिरंगी

दिनांक 10 मई 1987 (मूल्य तीन मिनिट)

वीना बीचा
काम बीगा
नाम - बाबू
चौधरी कक्षा
बीच कु 3।।

~~ कठपुतली मे एक ...~~
हपकडी में एक ... लगहाथा और यह कहता हुआ
... और ऐसा कहता हुआ एसा कभी आ होते।
... वहां एक शाला के घर पर ... दिनों में एक लड़का
... दिनों के बाद एक लड़का हुआ। ~~और ... उसने उसे~~
... हुआ एसा रोज होय वह एसा ... कहता हुआ एक
गांव के बड़े ... सेठ मर गये थे।
... उन के उनके घर वालों समझाया कि एसा ... वहां
... हो गया और उसके सहारे से पहुंच गया और
... वाले घर में आ रहे थे ... और लड़कि बोली रोटी
... खाई ले ... तो रख हमारी तो भूख ...
... कि ... यहि आ जाये।

... रास्ता आपके घर में आधी रोटी तो थी। तो उनके घर की औरतों ने
... है। तो एक कुमारण के गांव घुम गए थे। तो उसने अवंचली से पूछा
... एक गुफा में रूके थे उस कुमारण के गांव ... गये। एक
... राजा ने अवंचली को बुलाने का आदेश दिया ...
... हमारी बेटी का हार घुम गया है। उसका पता सुबह आठ बजे तक
... अवंचली को रात को नींद नहीं आती थी इसलिए वह यह कहने लगा कि
गांव में सिंदाली मुंदाली नाम की दो लड़कियाँ रहती थी उन्होंने वह
... कहा की अवंचली वह हार हमने चुराया है। आज ... यहां से उठाया
अवंचली के पास आये अवंचली ने कहा यहाँ रखा था वही देखलो
... दिये।

नाम :- इकबाल खाँ
कक्षा :- 8 वी
ग्राम :- मालकुण्ड

फरहान भाई के निर्देशन में बच्चोंने बनायी दो कृतियां

जहां मिट्टी आकार ले रही है

अंतिम पत्र

महोदय, समावेश मे निम्नलिखित का ज्यादा ही समावेश हो गया है कृपया ... पर ... लगाए - ...

एक बिल्ली को चुहा मिल...
उस चुहा को देखकर उस...
लपकी चुहा अपने बिल में ...
बिल्ली बिल के पास जाकर...
बिल्ली → मुँछ मुछेन्दर बाँ...
हम कहे कपा तुम निकलो
चुहा बेला की

प्रश्न-मंच

समावेश में बने दैनिक अखबार 'समावेश टाइम्स' के कुछ हिस्से

जो करे तो सो पाछे पछताय,
आपना जग में हो न हँसाय।

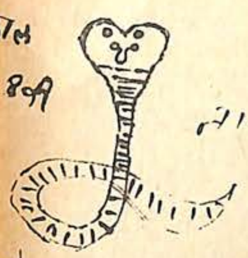

एक बार एक व्यक्ति की छोरी को बुखार चढ़ा तो वह डॉक्टर के पास गया। और बोला की मेरी छोरी को बुखार चढ़ गई तो डॉक्टर ने कहा की छोरी के गले में रस्सी बाँधकर तीन डुबकी लगादो तो बुखार उतर जाएगा तो उसने वैसा ही कीया

तो उसने उसके पीता जी के गले में रस्सी बाँधकर उसने तीन डुबकी लगाई तो उसके पीता जी मर गए तो तो वह रोने लगा तो रामप्रसाद इसके बाद उसकी माता जी को को बुखार चढ़ गया तो उसने वैसा ही कीया जैसे उसके पीता को कीया तो उसकी माता जी भी मर गई तो और ज्यादा रोने लगा तो उसे समझाया इसके बाद उसकी पत्नी को बुखार आगया तो उसने उसके गले में रस्सी बाँधकर तीन डुबकी लगादी तो उसके पत्नी भी मर गई। तो उसने सोचा की बुखार मारा घर डूब गया और बहुत जोर से रोने लगा।

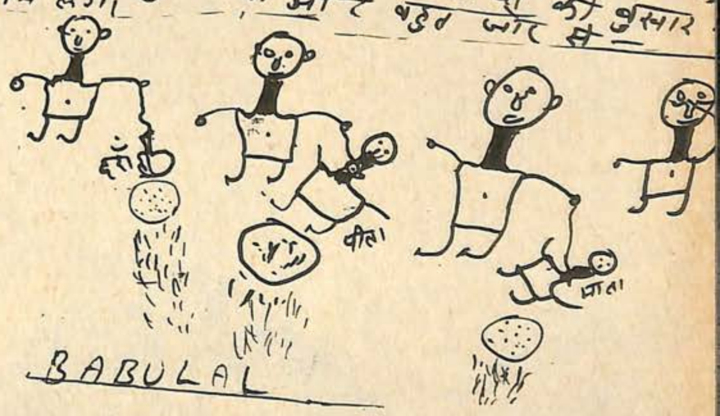

BABULAL

कचरे के बीच आठ घण्टे

समावेश 9 मई (निज) कला गुरु श्री विष्णू चिंचालकर के कला प्रदर्शन से प्रभावित होकर दिल्ली से शिविर में पधारे श्री रमेश पासवान परिवेश से प्राप्त कचरे से लगभग आठ घण्टे खेलते रहे,

अपनो से अपनी बात

"आवेश आपके हाथो मे देते हुए अत्यंत प्रसन्नता अनुभव कर रहे हैं. इस अखबार के माध्यम से अखबार के स्वरूप से परिचित कराने जा रहे हैं. अपनी बेबाक प्रतिक्रियाएं हमें लिख भेजे तथा रचनाओ का स्वागत है.

शेष फिर

बिल्ली
के पीछे
घुस गया
बोली
क राव,
बहार,।

एक समावेशी का अनुभव

समावेश' कार्यक्रम के रूप में सफल रहा ही, परंतु इसमें हुई कई बातें, घटनाएं ऐसी हैं, जिनको मैं हमेशा नहीं भूलूंगा। कई बार हमें दुख भी हुआ और कई बार खुशी भी। कुछ असामाजिक तत्वों ने गड़बड़ की तो 'सबला संघ' की दीदियों ने उन्हें ठीक कर दिया। मुझे लगा ये तो सचमुच सबलाएं हैं। उनका गुस्सा देखकर मुझे पसीना छूटने लगा और फिर पूरे समय दीदियों से डरता रहा।

हफीज भाई ने नाटक करवाए एवं सभी को एक नकल करने को कहा। मेरी बारी आई तो मैंने उनकी ही नकल कर दी, तो हफीज भाई ने जो प्यार से दो धप्पे मारे थे वो कभी नहीं भूलूंगा।

पानी के लिए टैंकर वाले से झगड़ा करना भी एक अच्छा अनुभव था। समावेश में कैरन दीदी जो अमेरिका की मूल निवासी हैं को देखकर भी बच्चे बड़े खुश होते थे। हर बच्चा कैरन दीदी से बात करना चाह रहा था, पर उन्हें थोड़ी भाषा की दिक्कत थी।

दिल्ली से सेंडिट की दीदियों के वीडियो कैमरे ने भी बहुत धमाल किया। हर कोई वीडियो फिल्म में आने की कोशिश कर रहा था। अनवर भाई ने कठपुतली के माध्यम से सभी से बातचीत की। एक बड़ा सा गुड्डा हाथ पर रखते और बात करने लगते, यह मजेदार था। आखिरी दिन रात को तीन बजे तक सभी बच्चे एवं स्रोत समूह के साथी नाचते रहे। इतना गाना-बजाना और नाचना हुआ कि पांव बिलकुल टूट से गए।

अंधविश्वास के कार्यक्रम में कई बच्चों ने साधु बने विवेक भाई के श्रध्दा से पांव पड़े। कई बच्चे अपना परीक्षा परिणाम जानने को उत्सुक थे।

जब इंदौर घूमने गए, शीश मंदिर देखना एक बहुत ही विचित्र अनुभव था, हर तरफ अपना चेहरा देखकर परेशान हो गए। फूटी कोठी में तो ऊपर से आवाज लगाकर देख रहे थे कि शायद प्रतिध्वनि हो।

समावेश के समापन के दिन कई साथी जिनमें धार से आए नाट्य मंच के सदस्य तथा देवास के साथी रोने लगे। काश! यह समावेश हमेशा रहता और हम इसी तरह रहते। सभी से इतने अच्छे-रिश्ते बन गए हैं कि मिलने को बार-बार जी चाहता है। यों तो हमने बहुत सीखा-सिखाया, परंतु जो प्यार, झगड़े, बातें, घटनाएं समावेश में मिली वो एक ऐसी पुस्तक के रूप में हमारे साथ रहेंगी जिन्हें कोई मिटा नहीं सकेगा।

☐ संदीप, देवास

चित्र : धीरजसिंह सेंधव, आठवीं, फांगटी, देवास

बरगद की कटी हुई पत्ती और गुलमोहर के फूल की पंखुड़ी से बनी नर्तकी की एक मुद्रा।

यह आदिवासी भील चादर लपेटे खड़ा है। बूझो तो भला किन चीजों से बना है!

जुलाई, अगस्त एवं इस अंक में प्रकाशित गुरूजी के चित्रों के छायाकार, **श्री निहाल चंद जैन**, इंदौर हैं।

पंजीयन क्रमांक 1317/सी/85
डाक पंजीयन क्रमांक BPL/DN/MP/431/87

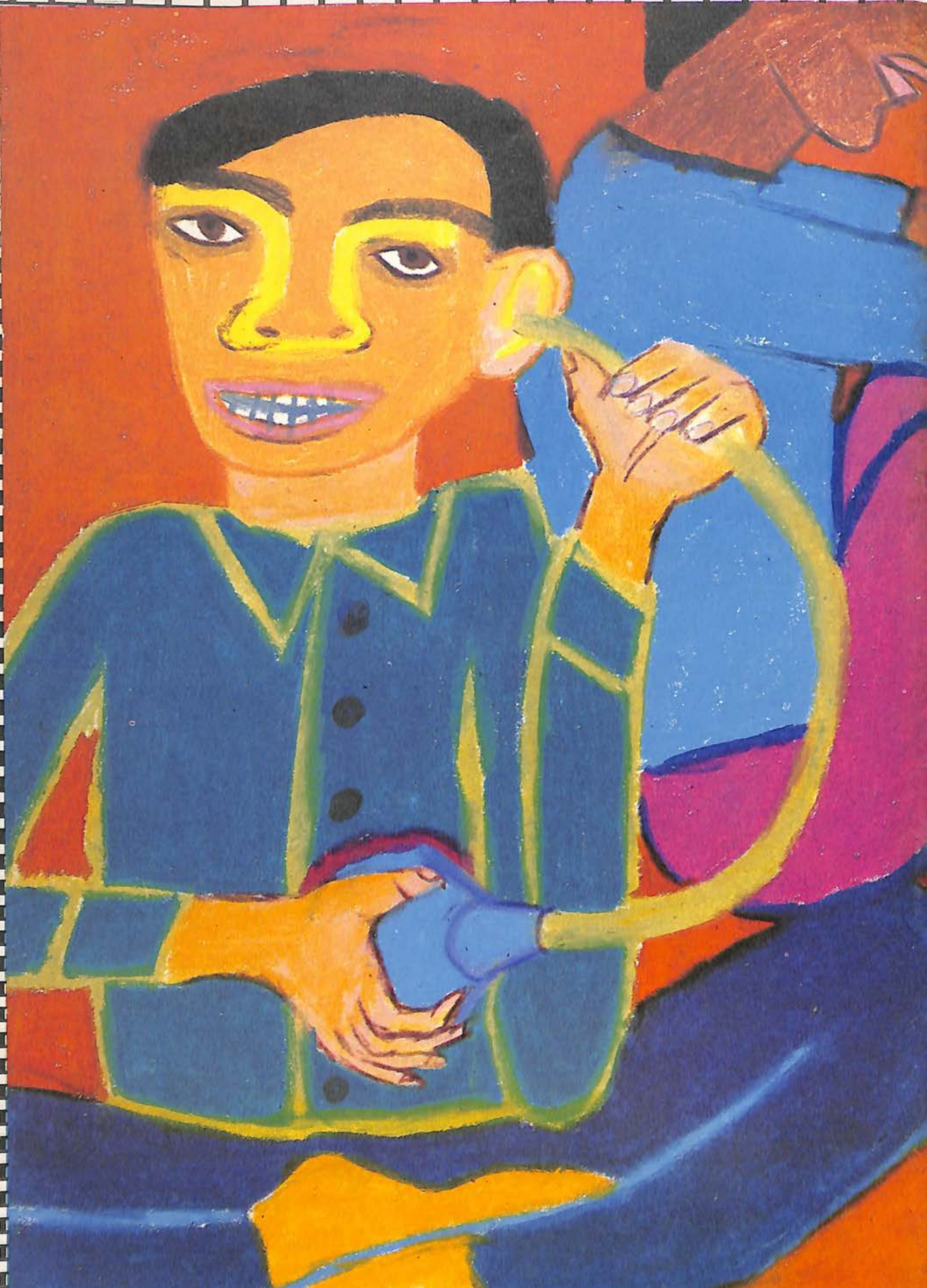

एकलव्य के लिए विनोद रायना द्वारा प्रकाशित एवं भंडारी आफसेट प्रिंटर्स, भोपाल द्वारा मुद्रित
कागज 'यूनिसेफ' के सौजन्य से